जंगमयुग प्रधान श्रीजिनदत्त सूरीश्वरजी सद्गुरुभ्यो नमः

प्राचीन स्तवनावली

प्रसिद्ध कर्त्ता:-

श्री श्री १०८ श्री गुरुणीजी महाराज 'आनन्दश्रीजी'
व श्री कल्याणश्रीजी के सदुपदेशसे 'जेसलमेर'
'फलोधी' आदि गांवोंकी श्राविका वर्ग—

ॐ

जंगमयुगप्रधान श्रीजिनदत्त सूरीश्वरजी
सद्गुरुभ्यो नमः ।

प्राचीन - स्तवनावली ।

जिसको—

श्रीखरतर गच्छ गणाधीश्वर १००८ श्रीजिनयशः
सूरिजी महाराजकी सुशिष्या श्रीमति १०८
श्री 'आनन्दश्रीजी' महाराज व श्रीकल्याण-
श्रीजी के सदुपदेशसे मारवाड जेसल-
मेर-फलोधी आदि नगरों की
श्राविका वर्गने छपाकर
प्रसिद्ध किया.

मार्फत्

मन्नालाल मिश्रीमल चोपड़ा

रतलाम — (मालवा)

प्रति १०००   卐   अमूल्य भेट.

श्री वीर सं० २४६०, विक्रम सं० १९९०, सने १९३४.

Printed by Manilal Ugarchand at Shree Laxmi Printing Press : Kalupur : Tankshal : Ahmedabad.

श्री जिनदत्तसूरिगुरु, आचारज गुणवान।
लब्धिधारक आपसा, नहीं कोइ दूजा जान

पांच नदीको साधकर, साधे पांचो वीर।

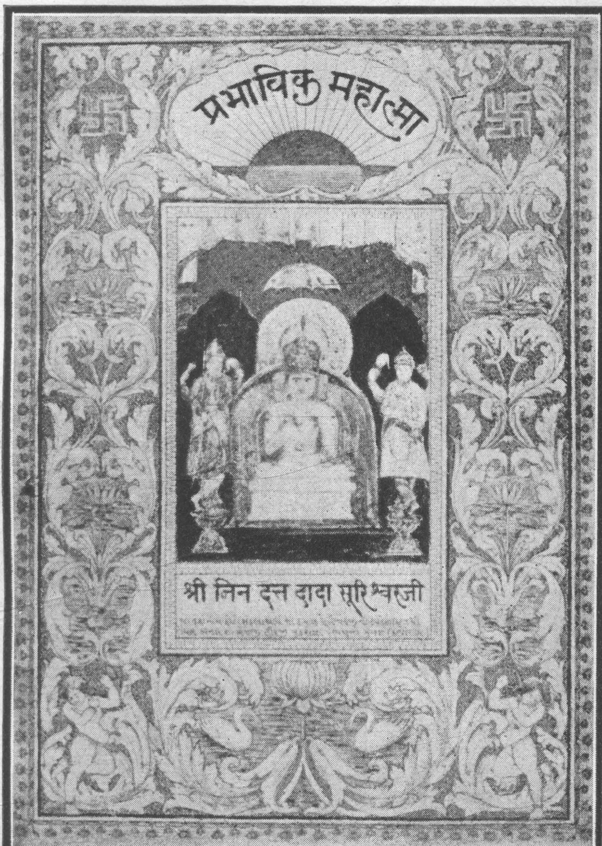

पांचों योगिनी जीतकर, वशकिये बावन वीर

सद्गुरु भ्यो नमः।

श्रु मन्नालाल मिश्रीमल चौपड़ा रतलाम

Lakshmi Art,
Bombay 8.

प्रस्तावना–

सज्जन नर नारिओ! इस असार संसार में अनादि कालसे भवभ्रमण करते हुए जीवको संसारके जन्म मरणादि दुःखोंसे छूटने के व्रत नियम दानानि अनेक उपायोंमें से श्रीजिनेश्वर देवकी भक्ति एक सर्वोत्तम उपाय है, श्रीजिनराजकी भक्तिके अनेक प्रकार हैं, उनमें तीर्थंकर देवके सद्भूत गुणोंका कीर्तन करना यह अत्युत्तम है, क्योंकि प्रभुगुणों में मनकी एकाग्रताही कर्मनिर्जराका खास हेतु है, और प्रभुगुणों में मनकी एकाग्रता जैसी प्रभुगुणोंको गानेसे होती है वैसी अन्यसे नहीं, जिस गायन विद्यासे अज्ञ आदिकभी मंत्रस्तंभितकी तरह मुग्ध बन जाते हैं उसी गायन कलासे श्रीवीतराग देवके गुणोंमें लयलीन हुए भक्त जीव अनेक भवोंके संचित क्लिष्ट कर्म क्षण भरमें नष्ट करदेते हैं, जैसेकि–मयणा सुंदरी, श्री श्रीपाल महाराजा तथा श्री खरतर गच्छ नायक श्रीमद् अभयदेवसूरिजी महाराज आदिके कुष्ट रोगादि नष्ट हुए और ऋद्धि, संपत्ति, शासन उन्नति प्राप्त करी, इतनाही नहीं. बल्के रावण जैसे ने प्रभुगुण गानमें ही तल्लीन होके तीर्थंकर नामकर्म बांधा है, इसीलिये प्राचीन कालके अनेक आचार्य आदि मुनिमहात्माओने स्वपरके हितार्थ अच्छे अच्छे भावपूर्ण स्तवन बनायेहैं, जोकि बहुत छप चुके हैं फिरभी बहुतसे ऐसे है कि जो अभीतक नहीं छपे, वैसे स्तवनोंका संग्रह इस 'स्तवनावली' में किया गया है।

इसको श्रीखरतर गच्छ गगनांगण नभोमणि—अनेक भव्य प्रतिबोधक—शांत वचन—समदृष्टि—प्रशांत चित्त—पुन्यमूर्ति—मुनीश्वर—श्रीमन्मोहनमुनिजी महाराज. प्रसिद्ध नाम श्रीमोहन लालजी महाराजके आज्ञानुवर्ति मुख्य शिष्य-परम शांत-परम तपस्वी-आचार्य प्रवर-श्रीमज्जिन यशः सूरीश्वरजी. प्रसिद्ध नाम पंन्यासजी—श्रीजसमुनिजी महाराजकी आज्ञानुयायिनी साध्वी-श्रीमति आनन्दश्रीजीकी विदुषी शिष्या श्रीमति कल्याणश्रीजीने तयार कियाहै, इस स्तवनावलीमें अन्यान्य स्तवनोंके साथ श्रीजेसलमेरमें बनाये हुए अनेक जूने जूने स्तवन हैं।

इस पुस्तकको जेसलमेर (अभी आरबी) निवासी सुश्रावक राजमलजी सकलेचाकी धर्मपत्नी श्रीमति भूरीबाई आदि श्राविकाओंकी प्रेरणासे तथा उन्हींकी द्रव्य सहायतासे छपाके प्रकाशित किया गया है, इसमें छापनेवालेकी गफलतसे या दृष्टिदोषसे जो कोइ भूल रहगइ हो उसको पाठक गण सुधारके पढें इति शम् ॥

संवत् १९८९ महासुदि
रतलाम (मालवा)

निवेदक,
पं० केशरमुनिजी

श्री श्री १००८ श्री जैनाचार्य श्री जिनयशः
सूरिजी महाराज साहबका संक्षेप

जीवनचरित्र

प्रिय वाचकवृन्द ? शान्तमूर्ति–महातपस्पी श्रीमद् "जिनयशःसूरिर्जी" महाराजका जन्म सं० १९१२ में 'जोधपूर' नगरे हुवाथा, गृहस्थापन में आपका नाम 'जेठमलजी' था. आपका जैनधर्म से अत्यन्त प्रेमथा, बाल्यावस्था से ही जिनेन्द्र पूजा–प्रतिक्रमण–ज्ञानाभ्यास आदि धर्मकरणी में लयलीन रहते थे।

गृहस्थावस्था में ही आपने अट्ठाई, पन्दरह, पैंतीश इक्कावक उपवास की तपश्चर्या कीथी।

आपने अपनी २८ वर्षकी युवावस्था में ही निज जन्म भूमि जोधपूर में श्रीमान् पूज्यपाद धर्मधुरंधर परोपकार तत्पर शासन रक्षक सदुपदेश दाता प्रातः स्मरणीय, सुसंयमी प्रसिद्ध महात्मा "श्रीमन्मोहनलालजी" महाराजके पास सं० १९४० में बडे धामधूमके साथ दीक्षा ग्रहण की तबसे आपका नाम "श्रीमद् यशोमुनि" स्थापन हुवा.

दीक्षा लेने के बाद भी आपने अट्ठाई, पन्द्रह, मासक्षमण आदि अनेक तपस्यायेंकी और अंग उपाङ्ग सूत्रादि श्री

जैनागमका सम्यक् प्रकार योगोवहन भी किया, अतएव अमदाबाद नगर में श्री दयाविमलजी म० प्रमुख श्रीसंघने आपकों सं० १९५६ में " पंन्यास श्री यशोमुनिजी गणि " इस पदवी से विभूषित कियेथे.

बालुचर मक्सोदाबाद निवासी श्री संघने " श्रीमद् जिनयशः सूरिजी महाराज " यह आचार्यपदकी स्थापना सं० १९६९ जेठ सुदि ६ को की थी.

सं० १९७० श्री पावपुरी (चरमतीर्थंकर श्रीमहावीर प्रभु का निर्वाण प्राप्तिस्थान अति पवित्र तीर्थ भूमि) में ५२ उपवास की तपस्या सहित श्रीवीर प्रभुका स्मरण करते हुए उन्हीके ध्यान में काल करके आप देवलोक में प्राप्त हुए, परिचय के लिये आपका चित्रभी इस पुस्तकमें रक्खा है.

कल्याण श्री

१००८ श्री मज्जिनयशः सूरिजी महाराज.

गणिपद-पंन्यासपद सं० १९६३
अमदाबाद.

आचार्यपद संवत् १९६९ जेठ सुदि ६. बालुचर मकसुदाबाद.

दीक्षा सं० १९४० जेठ सुदी ५
स्थान जोधपुर.

जन्म संवत् १९१२
स्थान
जोधपूर.

स्वर्गवास संवत् १९७०
मगसर सुदि ३ सोमवार
स्थान पावापुरी.

मार्फत्-मन्नालाल मिश्रीमल चोपड़ा, रतलाम.

Lakshmi Art, Bombay, 8

श्रीमति गुरुणीजी १०८ श्री आनन्दश्रीजी महाराज साहबका संक्षेप

जीवनचरित्र

प्रिय वाचकगण ? शान्तमूर्ति महातपस्वी श्रीआनन्दश्रीजी महाराजका जन्म गाम 'गंटीयाली' में विक्रम सं० १९२३ मिती फाल्गुन वदि १३ को हुवाथा मोसाल में आपका नाम "आणंदकँवरबाई" रक्खाथा, आपके लग्न मु० फलोधी में लक्ष्मीचंदजी गुलेच्छा के सुपुत्र मूलचन्दजी के साथ हुए थे. लग्न होनेके ४ वर्ष बाद याने २० वर्षकी वय में इस संसारकों असार जाण हजारों रुपये का द्रव्य छोड़ गांव फलोधी सं० १९४३ में आपने बडे धामधूम के साथ दीक्षा ग्रहण की. दीक्षा लेने के बाद आपने अट्ठाई, दश, एक पक्ष, साला, मासक्षमण, आदि छोटी मोटी वहुत तपश्चर्या की है.

इसी तरह आपने सं० १९६३ मु० सुरत में श्रीमान् १००८ श्री "यशः सूरिजी" महाराज के पास बडा जोग वहन किया.

यह प्राचीन स्तनावली पुस्तक भी आपश्री के व श्री कल्याणश्रीजी महाराज के सदुपदेशसे श्राविका वर्ग की तर्फ से प्रकाशित हुई है ।

करीब १॥। वर्षसे आपकों एसी व्याधी प्राप्त हुई के

दिन पर दिन शरीर कृप होने लगा. आखिर मु० रतलाम में सं० १९९० मिती फागण सुदि १९ गुरुवार कों ६७ वर्ष की वय में पंचपरमेष्ठि के शुभध्यान में आपका देहान्त होगया, अंतसमयमें आपकी स्मृति अच्छी रही और श्रीकल्याणश्रीजी म० आपकों जिनेन्द्र प्रभुका स्मरण कराने में व विनय वैयावच्च भक्ति में किसी तरह त्रुटि नहीं की ॥

मन्नालाल चोपड़ा
रतलाम.

इस पुस्तक के छपाने में द्रव्य सहायता देनेवाली, सुश्राविकाओं की नामावली

जे०		पुखराजनी माता	रु. १०)
से० आनन्द कँवरबाई	रु.	छगनलालनी माता	रु. ११)
ना० पानकँवरबाई	रु. ५०)	रुपांबाई	रु. ७)
भतकाबाई	रु. ४०)	गुलाबबाई	रु. ७)
सूरजबाई	रु. ३५)	मीनाबाई	रु. ७)
भूरीबाई कस्तूरांबाई	रु. २५)	सुरजबाई	रु. ५)
केसरबाई	रु. २५)	गजरांबाई	रु. ५)
छगनीबाई	रु. २०)	छूटक	रु. १५)

श्री १००८ श्री आनन्दश्रीजी महाराज

आचार्यपद जोग सं० १९६५ मगसर सुदी १५ स्थान 'सूरत'

जन्म सं० १९२३ फालगुण
विदी १३
स्थान गंटियाली.

दीक्षा सं० १९४३ मगसर
विदी १
स्थान 'फलोधी'

मार्फत–मन्नालाल मिश्रीमल चोपड़ा, रतलाम.

Lakshmi Art Bombay 8.

प्राचीन स्तवनावली.

॥ अथ चैत्यवन्दन ॥

(मंगलाचरण)

पहेला प्रणमुं प्रथम नाथ, श्री आदिजिनेश्वर। बीजा अजित जिनदेव, वंदु परमेश्वर ॥ १ ॥ श्रीसंभव भव संभव, त्रीभुवन तारण। अभिनन्दनने सुमतिनाथ, दोय दोय दुःख निवारण ॥ २ ॥ पद्मप्रभु श्रीपाससुपास, चंदा प्रभु चन्द्र। प्रह उठीनें वांदसुए, नवनिधि होवे जस सेव ॥ ३ ॥ विधीसु वांदु सुबुधीनाथ, शीतल सुख दायक। श्रीयांस ने श्री वासुपुज्य, जीवण जगनायक ॥ ४ ॥ वंदु विमल अनंत धर्म, एक चित्त चिंतामणी ॥ श्रीशान्ति करण सहु शान्ति कुंथुअर मल्लिमुक्तामणि ॥ ५ ॥ मुनिसुव्रत स्वामी वांदसुए, नमि नेमि कुवार। पार्श्व वीर जिन प्रणमुसुए, जे मुझ हर्ष अपार ॥६॥ त्रीभुवन मांहे जे जिनप्रासाद, शाश्वता अशाश्वता।

ते सवि वन्दु वर्त्तमान, अतीत अनागत ॥ ७ ॥ श्री सीमंधर विहरमान ए वीश तीर्थंकर । अढी द्वीप मांहे छाजे, महा मुनीश्वर ॥ ८ ॥ ते सवि वन्दु वगत वरणी, श्रीजिनशासन सार । जे निश्चय आराधसे ए, ते तरसे संसार ॥ ९ ॥ हवे श्रीशेत्रुंजय आदीश्वर स्वामी, वंदु उज्जलगढ । अष्टापद ने समतशिखर वन्दु जिनवर नंदीश्वर ॥१०॥ गौगे नवखंडापास जे जगने तारे । जीवित स्वामी जुगादि वन्दु सुपारे ॥११॥ भरूअच्छ वन्दु मुनिसुव्रत—थंभणपुर श्रीपास । पाटण ने पंचासरोए, जो प्रभु पूरे आश ॥१२॥ दो देरिये श्रीशांतिनाथ, दो देरिये वंदु महावीर । मल विहार जुवार वीर साचोरी मंडण ॥१३॥ गोडीजी जीरावलो पास, वन्दु वरकाणे । पर्वत ए जाणो प्रसादा जे जग सहुने जाणो ॥१४॥ राजगृही विहार करी, वन्दु वीर जिणंद । गोड़ी पास स्वामी, नगरे प्रणमु परम आणंद ॥ १५ ॥ एक नमत चौगने पास, चउगति निवारण । रीजोले वर पारसनाथ, भवसायर ने तारण ॥१६॥ मांडवगढ़

ए गडध्याने, वन्दु सुविहाण । नंदायो रायोसिद्ध, जे जग सहुने जाणे ॥१७॥ नाभिराय कुल वांद-साए, ज्यांछे जिनवर देह । सुभीया श्रीआदिनाथ–इन्द्र करे नित सेव ॥१८॥ नलिनी गुल्म विमाण विहाण समाण, राणपुरे वन्दु चौमुखे । नवपलकते च्चिरक कोड़ जिनवर दे सब सुख ॥ १९ ॥ माडे वाँदु श्रीसुपास–ते वगसीने तारे । बड़नगर इन्दौर वड़ो नगर जुव्हारे ॥२०॥ आराधसाए उद्यम सारा, ज्यां छे भवन विहार । नाण तोयतो नाम-सारा जीवितस्वामी जुहार ॥२१॥ हवे श्रीशत्रुंजय आदिश्वरस्वामी, पामु लोढाणे । इहां विमाण वाडमेर जिनवर जोधाणे ॥२२॥ अवरजीके सहु गाम ठाम, ते सहु जीलावे । शिरोही मुख आदमुख, मुख वांदु टमकारे ॥२३॥ इमके तीर्थंकर प्रणमुं वन्दु एक चित्त । अजर अमरपद लहे, पामु परम आणंद ॥ २४ ॥

॥ अथ जय महाशय ॥

जय सबल सुरासर नमिय पायणाए, जय कंचन कोमल पभणे रायए। जय सुन्दर सुभवि सीर सौभागण, जयशान्तिजिनेश्वरभमणेरायए॥१॥ सुभ वैमाणिकथी चवीया, स्वामी नयर हथना ऊरपुर गामए ॥ विश्वसेन नरेसर-गृह मझारए, पटराणी अचिरादेवी नार ए ॥२॥ तसु उदर सरोवर-राय हंस ए, अवतारिया हो जिनवर कुलमा वंश ए। आये—सातम भादवरे मास ए, नही अनुपम संख रास ए॥३॥ चवदे स्वप्न लया जननी ताम ए। निरखे सहु गयवर जिनवर भोयण साम ए। जेठ वदि तेरस पढमे पक्ष ए। जायो जिणनायक भरणी रिख ए ॥४॥ दिशि कुमरी छप्पन गुण विसाल ए। जल आसण लावे गणे रसाल ए। निरखे सहु नवीनथी सुहीरे ऋमए'कुर निर्मल तिहां सुख अच्चज डंभ ए ॥५॥ सुर गीरसलेवण जिनवर अंग ए। हवे नवण करावे चौसठ इन्द्र ए। जल भरिया हो रूपे सूवन्नमें ए। एम भणे कलश जोजन मे

सये ॥ ६ ॥ तो बावन चंदन नव कपूर ए, कस्तु-
रीओ केसर अगर धूप ए। रसमे विलेपण लावे
इन्द्र ए। बहु भंगे ओलावे सुर गिरवर रंग ए ॥७॥

॥ दोहा ॥

हवे नवण विलेपणा, भाव धरे पण पेलो परम
आणंद करो देवा परम आणंद करो॥ चौसठ सुरा-
सुर श्री शांति जिनेसर रचे पूजन नव नव करे देवा
रचे पूज नव नव करे.

॥ ढाल दूसरी ॥

सोहम केवड़ो चंपो मरवोए फलवानवण बोड
वणवो गिरवो ए ॥१॥ पाडल परिमल सयल जग
मोया ए। सिद्ध सेवंतीया सोयरे भासोय ए ॥२॥
पाडल परिमल गुण ए विशाल ए। वय कथ जाथ
करणे नवा नवकये॥ ३ ॥ इण पर अवर वरे फूल-
माला गणे ए। लेइ सुर असुर वरे देव लोयणे
वणी ॥४॥ विवेक, करी पुज श्रीशांति तीर्थंकर तेर
मंडणपते रयणमयी सुन्दरी ॥५॥ तेम तंवुर वाजंती

वारस वह किन्नरी गीत गावंती सुखा वहु ॥ ६ ॥
रण रण नेवरा नाच ए, सुरवर पंखीया एक दीठी
तिहां आण सही ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

कर ओच्छव भगते निरमल चित्ते थुणी अर
हरख भलेव जिणे देवा थुणी हरख भलेव जिणे
सिव जननी पासे नहीं अ अवासे पछे सुरनर अ-
सुरवरे देवा सुरनर असुर वरे.

॥ ढाल ३ तीसरी ॥

अवतरीआ ओ कूंखे होय शान्त तिण कारण नामे
स्वामी शान्त जोजन धनुष्य चालीश प्रमाण ॥ दोहा
मृगलछन लावे अंतेवर गीर अंतेवर चौसठ सहस्स
भोग तयक्षीण क्षिण मयरराज भोग जेठ वदी च-
उदस वरस संयम श्री लयो आपणे दिवसा केवल
श्री लयो, पोष मास सहु नमे पुरी इन्द्रे आस पेडी
उण धर्मतीर्थ भवजल निज तारण सामी शान्त
॥ ३ ॥ श्रीसीमंधर चक्केसरी मुनिपद भोगवे सह-

स्स वरस पच्चीस जेठ वदी तेरस वरस लक्ख सं-
पूरन सामी लियो मोक्ष सम्पूर्ण स्वामी लयो मोक्ष
॥४॥ दुहा॥ थुणिये सुजाण पांच कल्याण अणयर पुर
श्री तिलो वरे देवा अणियर पुर श्री तिलोवरं श्री
शान्त जिनेसर भवन जिनेसर हवे विजय
श्री शान्त करो, देवा हवे वीजे श्री शान्त करों
॥ सम्पूर्ण ॥

॥ चौथका स्तवन ॥

देश मेवाड़में दीपता ए राह

सोहे सहस्स फणा सोहामणा सोहे श्रीरे चिंतामण पासजी सोहे लोद्रवपुर महिमा, घणी, जब जागंती ज्योत उजासरे ॥ सो० ॥ १ ॥ होजी जग सहु आवे जातरी, दिन नवा नवा गेह गाटरे। सोहे स्नात्रपूजा नाटक भला, भला धूपधाणासु घाटरे ॥ सो० ॥ २ ॥

॥ ढाल २ री ॥

सह्यां मोरी जूनो नगर भलो लोद्रवो, मांड्या सखरा मंडाण है सह्यां । पार्श्वनाथजीरो देहरो,

आभा सखरा मंडाण है सह्यां ॥ जू० ॥ १ ॥ सह्यां मोरी तीर्थ थानक तीर्थ थापियो, लीधो लीधो लक्ष्मीनो लाभ है सह्यां ॥ जू० ॥ २ ॥ सह्यां मोरी धन माता धन पिता, धन धन "थेरू" साय ॥ सह्यां ॥ जू० ॥ ३ ॥

॥ ढाल ३ री ॥

धवल मंगल पांचे देहरारे, देव विमाण अवतार । दंड कलश धजा लव लवेरे । तील कोइ तोरण वार हर्षभर तीर्थ भेटस्यारे । आजमाने भमती २ मझार देइये तीन प्रदक्षणा सार श्रीपार्श्वनाथ जुवारीयां हर्षभर तीरथ भेटस्यां ॥१॥ रणझण घंटा रणकतीरे, मांड्यां स्वर्ग सुरबाद । मोटो तीरथ महिमा भलोरे, दीठा टले विखवाद । हर्षभर तीर्थ० ॥ २ ॥ समवसरण सोहामणोरे, अशोक वृक्ष अवतार । तीन छत्र शिर सोहतारे, त्रिभुवन तारणहार ॥ हर्ष० ॥ ३ ॥

॥ ढाळ चौथी ॥

मुरत मोहन वेल मुरत मोहन वेल है, सखी

म्हारी सहसफणा सोहे रलियावणा ये । अंगुली कमलीनी खेर रूडा सखी ॥ १ ॥ मोरी आंखडी अणीयालीरे, फूल कमल केरी पाँखडीयारे, वदन पूनम को चांद। सखी० ॥२॥ अडले प्रमाणे राता दांत दाडिमे कुलीये पान चरण अवलंत पान चरण अवलंत हे सखी ॥३॥ मोरी नखचख रूप रेख वाणी सुवाणीये। जाय जोय मचकुंद, मेदल तीये चंपकलाल गुलाब; कंठ पीठ माय सुरंभ लये लये गलगले फूल माल ॥४॥ काने जी कुंडल मंडपरये शशी, जगमग ज्योति अपार ॥५॥ चुनी चुनी जडिया मुगट घडिया सोवन घाट सुघाट । साहेलीये मोरी सोहे चिंतामणीजीरे पास । पूरे म्हारी मनडानी आस ॥६॥ सहेलडीये बाय बाजुबंद बेरखा सोहे चन्दन रये ससीया हीयाहार सार सिणगार सोहे वीचमोय सोय सिणगार;॥७॥ पंचवर्ण अंगी घणी सुरंगी वीया जेसी वात मन वीकसे तन हुलसे सखी मोरज कोले घनसार सखी मोरी सोहे ॥ ची० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥

अश्वसेन कुल चाँद्लोरे माता वामा देवी रो नंद्रे साह्यबीया । थारी सारे सुरनर सेवा, हुंतो देवारे ससीयर सेवा तोरे दर्शनरी स्वामी सुरतनी बलिहारी मुरतिनी बलिहाररे साह्यबीया ॥ १ ॥ तीन भुवनको राजीयोरे, जायो जायो पार्श्वकुंवाररे सा० ॥ २ ॥ तुहिं म्हारे जीवन आत्मारे, तुहिं म्हारे जीवन आधार। तुहिं म्हारे प्राण आधाररे सा० ॥३॥ दूजा देव तुझ ऊपरेरे, ओलु गोलु वारंवार। ओलु गोलु वार हजाररे सा० ॥ ४ ॥

॥ ढाल ६ ट्ठी ॥

साँभल जिनवर विनतिजी, थें छो चतुर सुजाण। सो बोले एक बोलसीजी, करवो आप समान चिंतामणी, म्हारे तुमसुं जी प्रीत ॥ १ ॥ करवो छे स्वामी मोहे दशाजी, करवो छे साहेब आप। भवइडा पीडा टलेजी, भवभव मांगू सेव ॥ चिं० ॥ २ ॥ आज नवनिध सिद्ध हुवाजी, आज भलो शुभ दिन। दंड कलश शिष्य जैतसीजी, जैतसीनी जोड प्रमाण ॥ चिं० ॥ ३ ॥ पूंसर्ण.

॥ आठमनी पूजा स्तवन लीख्यते ॥

॥ ढाल १ ली ॥

सोलमा जिनवर सेवियेजी, प्रह समे बे कर जोड। सुप्रसन्न वदन सोहामणो, पूरे वांछित कोड॥ सो० ॥ १ ॥ मुझ मन मोह्युं जिनगुणेजी। जिम साधु कर वंद राय। नाम सुणी मन हुलसेजी, लच्छी लीला थर थाय ॥ सो० ॥२॥ तुं जगजीवन वालहो जी, तुं गति तुं मति देव माहरो। चिंतित तुंहिय सजीलण करो ताहरी सेव ॥ सो० ॥ ३ ॥ धन धन तेह न ताहरोजी, पूजा रचाइ शुभ रसाल। सुलभ बुद्धि हुवे ते सदाजी धन धन तसु अवतार ॥ सो० ॥ ४ ॥ रायपसेणी सूत्रमेंजी, पूजा सत्तरप्रकार। अति गणे उलसे आदरोजी, ते सुणजोई तिकाल ॥ सो० ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥

भवियण भगवंत पूजो भावसु, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल हो भवियण, हवे विस्तार पूजा सुणो

आणी नवल स्नेह हो भवियण ॥ भगवंत ॥१॥ स्नान करी पुजा दसे करी, पावन मनरंग हो भवि०। पेरीस एक पट धोतीयो, एक पट उतरासण सार हो भवि० भग० ॥ २ ॥ मस्तक तिलक सोहामणो मौन थइ मुखकोस हो भ० ॥ पूजा अनेक विधि कीजिये, छः दिशे राग न रीस हो भ० भ० ॥ ३ ॥ रुमथो हत्थे धरिवो, पूजिस प्रतिमा एह । भ० । हवे विस्तार पूजा सुणो, आणी नवलो स्नेह हो भवि० भग० ॥ ४ ॥

॥ ढाल ३ तीसरी ॥

सतर भेद पूजा सुणो, उत्तमनीअ करन रे हो. गोत्र तीर्थंकर बांधीयो, भावे तो भव हरणी रे ॥ सत्तर० ॥ १ ॥ गंगोदक खीरोदक वडे, भोगाल विशालरे । पहेली पूजा कीजिये, प्रतिमानो पर वालो रे केशर भरियो कचोलडो, मृगमद चंदन भरीरे, दूजी पूजा कीजिये, कीजे तो भावना भेरीरे ॥ सत्तर० ॥ २ ॥ देव दुगफेडोमणी, तीजी तो पूजा

जाणोरे। चौथीरे पूजा अति सोहे, वासक्षेप खेवणोरे ॥ सत० ॥ ३ ॥ पगजामो करी खंधेसरे, भाल कंठ पूजीजेरे, उदन अंतर वसे नवे, अंग तिलक भरीजे रे ॥ सत्तर० ॥ ४ ॥ दमणो पाडल केतकी, जाई जुई मचकुंदोरे। चमेल शरीर वन मालती, अति उद्दकुंद अलमलदारे ॥ सत्तर० ॥ ५ ॥ इण विधविध फूलावडी, प्रभु चरणे वरचावोरे। पंचमी पूजा करे जे, मन वांछित फल पायोरे ॥सत्तर०॥६॥

॥ ढाल ४ थी ॥

छट्ठी पूजा हवे सुणोरे, अति सुगंध सुविशाल। जिनवर कंठे मोमयोरे, वृद्ध वृद्ध भावे भेटियेरे, भयभंजन भगवंत फूलारी माल साहेब समरियेरे, सोलमा जिनवर संत ॥ साहेब० ॥ १ ॥ जिनवर अंगे अंगी रचीरे, लेइ पंचवर्णना फूल। सुर नर किन्नर मोमयोरे, सातमी पूजा अमोलरे ॥साहेब०॥२॥ जिनवर कंठे मोरीयोरे, कस्तूरी कपूर। इणीपरे पूजा आठमीरे, जिणे कर्म किया चकचूर ॥ साहेब० ॥ ३ ॥

प्रभु पर कोरणीरे, रत्न जडित सोविसाल ॥
पंचवर्णनी ध्वजा लहलहेरे, नमो अह प्रकास ॥
॥साहेब० ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥

आभरण ने अति दीपतोरे लाल, सोभे शांति-जिणंद सुखकारीरे । मेरे मनमें थें वसोरे लाल ॥ दिन दिन अधिक आनंद सुख० ॥१॥ मस्तक मुकट सोहामणोरे लाल ॥ काने कुंडल दोय सुख०॥ बांय बाजुबंद बेरखारे लाल । कंठे नवसरयो हार ॥ सु० ॥ २ ॥ बीयु पासे चवर वींजतारे लाल । सिंहासण सरदार सु० । तीन छत्र शिरे सोभतारे लाल; दशमी पूजा उदार सु० ॥ ३ ॥ दमणो पाडल केतकीरे लाल, राय चंपो राय बेल ॥सु०॥ विमल शरीर वनमालतीरे लाल, फूलगण अम मेल ॥सु०॥४॥ फूलमेल रचीया भलारे लाल, फूल मंडप सु स्नेह-सु०फूल तणा सोहे चन्द्रवारे लाल, फूलांरी वंदरवाल सु०॥ ५ ॥ फुला तणा सोभे जुंमकारे लाल ॥ फुल—तोरण सुस्नेहा ॥सु०॥ फूल धरे मन मोहीयोरे लाल, इग्यारमी पुजा एह ॥ सु० ॥६॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

जहाँ प्रतिमारे देवतारे, फूल फूल वर्षावेरे। सरस सुगंध सोहामणो, जोजन फूल विछावेरे। पग दे तो पीडा नहीं होवेरे, जिनवर अतिशय पर भावेरे। फूल पगर अमर कीजियेरे, वारमी पूजा सोहावेरे॥१॥ दर्पण भद्रासन भणेरे, नंदाव्रत परधानोरे। पूरण कलश अम झगमगेरे श्रीवत्सने वर्द्धमानो रे॥ आठमा मंगल साथीयारे, जिनवर आगल कीजेरे। इण परे पूजा तेरमीरे, नरभर लावो लीजेरे॥ कृष्ण अगर उखेवणारे। धूप करो सलारस धूपनोरे, चवदमी पूजा सोहामणीरे॥ २॥ श्री जिनवर गुण गाइयेरे, सुंदर रस कलश रूपसता सुर नर तास जीव पंदरमी पुजा अमोल हवे नाचे देवांगणा साजि सोले सिणगार। गमगम वाजे घूघरा, पायें नेवर झणकार॥ ३॥ चन्द्रमुखी इणपर कहे, नाटक भेद बतीस। खइखई शब्द सोहामणो, गावे राग छत्रीस ॥४॥ सोलमी पूजा सुणो हवे, वाजा वाजत मृदंग।

ताल कंसारियां झालर सुख पवित्र ॥ ५ ॥ वाजे वीणाजी वांसली, वाजीया जागीजी ढोल । मदन वेल वाजेमका गीतोरार मजोर ॥ ६ ॥ सतर भेद पूजा सुणो, सूत्र तणे अनुसार । भाव धरी नर जे करे, तस घर मंगलमाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल ७ सातमी ॥

जिन प्रतिमा जिन सारिखी, श्रीमुखसु जिनवर भाखेरे । यहां संशय कोइ नहीं, सौधर्म स्वामी साखेरे ॥ १ ॥ झूठ कदाग्रह वारियो, जिन प्रतिमा ते नवी माने रे, पण पापीयो ते भरे, परमारथ मूल न जाणेरे ॥ २ ॥ प्रभावती पूजो सदा, जिनप्रतिमा पूजणमें अग्रनेरे, श्री पंचम अंगे करी जिनप्रतिमा जे आसरणोरे ॥ ३ ॥ सूयाभे कीनी सदा, जिनपूजा सतर प्रकारेरे । द्रुपद सुता सखी द्रौपदी, श्री ज्ञाता अंग विचारोरे ॥ ४ ॥ आर्दक कुंवर मन निरमलो, प्रत्ये वूधो प्रतिमा दीठीरे, त्रिकरणे पूजो सदा, जिन प्रतिमा अंत सब साखीरे ॥ ५ ॥ मेरवसे

मोरो मन जेमे, सतिय मने भरतारोरे । जो मुज मन जिनवर वसे ॥ श्री फरबत कर सणगारोरे ॥६॥ द्रव्यने भावे करी मन अंगे पूजा कीजोरे । फरवत पुर मंडण सदा, श्रीशान्तिनाथ समरण कीजेरे॥७॥

॥ कलश ॥

एम नेण ससीकला वर्षे मासआसु शुभभणी। श्रीफरवत मंडण दुरित खंडण संथुण्यो त्रिभुवन धणी । श्री रत्न हरखत पुरण वाचक पूरवे सुख संपदा । संसार सागर हुवा सुप्रसिद्ध सोलमा जिनवर सदा ॥ होजी सोलमा जिनवर सदा ॥

॥ अष्टमीनो स्तवन ॥

पंचतीर्थ प्रणमुं सदा, समरी शारद माय ।
अष्टमी स्तवन हर्षे रचुं सुगुरु चरण पसाय ॥

॥ ढाल ॥

हांरे लाला जंबुद्वीपना भरतमां, मगधदेश महंतरे लाला-राजगृही नयरी मनोहरु, श्रेणिक बहु

बलवंतरे लाला। अष्टमी तिथि मनोहरू ॥ हांरे० चेलणा राणी सुंदरू, सीयलवंती सरदाररे लाला श्रेणिक सुत बुध छाजता, नामे अभयकुमाररे लाला ॥ अष्टमी० ॥२॥ हांरे लाला वर्गण आठमी एहथी, अष्ट साधे सुख निधानरे लाला-अष्टमद भांजे वज्र छे, प्रगटे समकित निधानरे लाला ॥ अ० ॥ ३ ॥ हांरे अष्टभय नासे एहथी, अष्ट वृद्धि तणो भंडाररे लाला। अष्ट प्रवचन ए संपजे, चारित्र तणो अण-गाररे लाला ॥ अष्टमी० ॥ ४ ॥ हांरे लाला अष्टमी आराधन थकी, अष्टकर्म करे चकचूररे--लाला, नवनिध प्रगटे तस घरे, संपूरण सुख भरपूररे लाला ॥ अष्टमी० ॥ ५ ॥ हांरे० अड दृष्टि ऊपजे एहथी, शिव साधू गुण अंकूररे लाला । सिद्धना आठ गुण संपजे, सिद्ध कमला रूप स्वरूपरे लाला ॥ अष्टमी० ॥ ६ ॥

॥ ढाल २ ॥

जिहो राजगृही रलियामणि, जिहो विचरे वीरजिणंद। जिहो समवसरण इन्द्रे रच्युं, जिहो

सुरासुरनी वृंद ॥ १ ॥ "जगत सहु वन्दो वीर जिणंद" ॥ टेक ॥ जिहो देव रचित सिंहासणे, जिहो बैठा श्री वर्द्धमान । जिहो अष्ट प्रतिहारज सोभता, जिहो भामंडल झलकंत ॥ जगत० ॥ २ ॥ जिहो अनंतगुणे जिनराजजी, जिहो पर उपकारी प्रधान। जिहो करूणासिंधु मनोहरू, जिहो त्रिलोके जगभाण ॥ जगत० ॥३॥ जिहो चौतीश अतिशय विराजता, जि० वाणी गुण पेंतीश ॥ जिहो बारे परषदा भावसुं, जिहो भगत नमावे शीश ॥ जग० ॥ ४ ॥ जिहो मधुरी ध्वनि दिये देशना, जिहो जिम आषाढीरे मेघ । जिहो अष्टमी महिमा वरणवे, जिहो जगबंधु कहे तेम ॥ जगत० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ३ तीसरी ॥

रुडीने रढीयालीरे वादीला थांरी वांसळीरे ।
तेतो म्हारे मंदरीये संभळाय ॥ ए देशी. ॥

रुडीने रढियालीरे प्रभु थारी देशनारे, तेतो जोजन लगे संभलायरे। तिगड़े विराजे जिन दिये देशनारे,

श्रेणिक वंदे प्रभुना पायरे । अष्टमी महिमा कहो कृपा करीरे; पुछे गौतम अणगाररे ॥ अष्टमी आराधने फल सिद्धनुरे ॥ १ ॥ वीर कहे तपथी महिमा एहनोरे; ऋषभनो जन्म कल्याणरे ऋषभ चारित्र हुवो निर्मलोरे; अजितनु जन्म कल्याणरे ॥ अ० ॥ २ ॥ संभव चवन त्रीजा जिनेसररे; अभिनन्दन निरवाणरे। सुमति जन्म सुपास चवनछेरे । सुविधि नेमि जन्म कल्याणरे ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुनिसुव्रत जन्म अति गुणानिधिरे, नेमि शिवपद लेह्युं साररे। पारसनाथ निर्वाण मनोहररे, ए तिथि परम आधाररे ॥ अ० ॥ ४ ॥ उत्तम गणधर महिमा सांभलीरे, अष्टमी तिथि परिमाणरे। मंगल आठ तणी गणी मालिकारे । तसघर शिव कमला परधानरे ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ४ चौथी ॥

आवश्यक निर्युक्तिये भासे, माहानिशीथ सूत्ररे । ऋषभे वंस दंडवीरज आराध्यो, शिवसुख पाम्यु पवित्ररे । ए तिथि महिमा वीर प्रकासे,

भविक जीवने भासेरे । शासन तारो अविचलराजे, दिनदिन दौलत वाधेर ॥१॥ "श्री जिनराज जगत उपकारी" ॥ त्रिशलारे नन्दन दोष निकन्दन, कर्म शत्रुने जीत्यारे। तीर्थंकर महंत मनोहरू, दोष अढारने वर्ज्यारे ॥ श्री० ॥ २ ॥ मन मधुकर जिन पदकज लीनो, हरखी निर्खि प्रभु ध्याउंरे । शिव कमला सुख देओ प्रभुजी, करुणानंद पद पाउं रे ॥ ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वृक्ष अशोक सुर कुसुमनी वृष्टि, चामर छत्र बिराजेरे। आशन भामंडल जिन दीपे, दुदुंभि अंबर गाजेरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ खंभायत बंदर अतिय मनोहर, जिन प्रासाद घणा सोवेर । बिंब संख्यानो पार न लेवुं, दरसण कर कर मन मो-हियेरं ॥ श्री० ॥ ५ ॥ संवत अट्ठारे ओगणचालीसे वर्षे, आसुमास उदाररे ॥ शुक्लपक्ष पंचमी गुरुवारे स्तवन रच्युं छे ताहीररे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पंडित देव सोभागी बुद्धि लावण्य, सोभागी तिणे नामरे । बुद्धि लावण्य लीयो सुख सम्पूर्ण, श्री संघने कोड कल्याणरे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

॥ एकादशी–श्रीमल्लिनाथजीरो स्तवन ॥

नवपद समरी मन सुधे, वलि गौतम गणधार। सरस्वति माता चित्त धरूं, वाधे वचन उदार ॥१॥ मल्लिनाथ उगणीसमां, जिनवर जगमें जेह। गुण गाइश हुं तेहना, सुगुण सुणो धरी नेह ॥ २ ॥ किण देशे किण नगरमें, कवण पिता कुण माय। पंचकल्याणक परगड़ा, विगत करि कहुं वात ॥ ३ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

रामचंद्रके वाग आंबो मोरी रयोरी ॥ ए देशी.

इणहिज जम्बूद्वीप, क्षेत्र भरत सुखकारी। नयरी मिथुला नाम, अलिका ने अनुहारी ॥ ४ ॥ तिहा नृप कुम्भ कहाय, राणी प्रभावती नामे। शीयल गुणे अभिराम, जस पसर्यो ठामो ठामे ॥५॥ एक दिवस तिहां नारी, सुता सेज मझारे। देखी चउदे स्वप्न. ते जागी तिण वारी ॥ ६ ॥ पहोंती पतिने पास, सुपन सहु ते कया। नृप

हरखे मन मांहे, अनुपम ए ते लया ॥७॥ सुपन तणे अनुसार पुत्री होस्ये पुन्यवंती। अर्थ सुणिने एह, घर पहोंती गह गहंती ॥८॥ कहुं पूरव भव वात, तिहांथी चवीने आया। वितसोका नामे नगर, महाबल नाम कहाया ॥९॥ ते मिलिया छए मित्र, सहु मिली दीक्षा लीधी। महाबलवंता मित्र, तप में माया कीधी ॥१०॥ थानिक सेव्या वीश, गौत्र तीर्थंकर बांध्यो। स्त्रीवेद उदार, पुन्य में पाप ए साध्यो ॥११॥ अणसण करिय तिवार, जिनधर्म सु लय लाई। छए मित्र जयंत विमान, सुरपद्वी तिहां पाई ॥१२॥

॥ ढाल २ ॥

श्री चंदा प्रभु पाहुणारे, ए देसी।

इणाहिज जम्बूद्वीप में रे, भरतक्षेत्र कहिवाय रे। छए मित्र तिहां जइ ऊपनारे, ते सुणजो चित लायरे ॥इ०॥१॥ पडिबुद्धा इक्ष्वा गमेरे, चंद्रछाया अंगराय रे। शंख काशीनो राजीयोरे, रूपी कुणाला

कहायरे । इ० ॥२॥ आदीन जितशत्रु देशमेरे, जितशत्रु पंचाल कहायरे । जयंत थी चवीने सहुरे, इहां अवतार लहायरे ॥ महाबल जीव तिहां थकीरे, पुन्यवंत प्रधानरे । फागुण सुदि चोथनेरे, चविया जयंत विमानरे ॥ इ० ॥४॥ प्रभावती उर अवतर्यारे, मास हुआ जब तीनरे । डोहलो एहवो ऊपनोरे, घिण पूर्या रहे दीनरे ॥ इ० ५ ॥ जल थल ऊपना फूलडारे, सोवु सेज बिछायरे । पंचवर्ण फूलना चंद्रवारे, सुगंध रूप सुहायरे ॥ इ० ॥ ६ ॥ नवसर हार फूलां तणारे, हुं पहिरुं मनरंगरे । वाण व्यन्तरे तिहां देवतारे, पूरे तेह सुरंगरे ॥ इ० ७ ॥ मगसर सुदि इग्यारसेरे, जायो श्री पुत्रीरत्नरे । अरधा निशी बोल्या पछीरे, माताजी हरखी मनरंगेरे ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ तीसरी ॥

आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी.

छप्पन कुंवारी आइ तिहां हरखे, जिनवर वंदि पायजी । जन्ममहोत्सव करिये जुगतिसुं,

गइ गइ गृहमति लायजी ॥ छ० ॥ १ ॥ चोसठ इन्द्र तिके पिण आवी, मेरू शिखर न्हवरायजी। गीत मधुर ध्वनि नाटिक करके, मूकी गया निज आवास जी ॥ छ० ॥ २ ॥ हिवे परभात थयो कुंभ राजा, जन्म महोत्सव कीधजी ॥ दशोट्ठण बहु जनने जीमावी, मल्लिकुंवरी नाम दीधजी ॥ छ० ॥ ३ ॥ एकशत वरस थया केहि ऊणा, अवधि प्रयुंजी तामजी। पूर्व भव छय मित्रा केरो, लही आगम नामजी ॥ छ० ॥ ४ ॥ ते मुझ रूपे मोह्या सघला, आवश्ये इणे ठामजी। इम जाणी कुंवरी गृह मांहें, कनक मुरति करी तामजी ॥ छ० ॥५॥ मस्तक छेद कवल एक मूके, आप जिमे तीण मांहिजी ॥ देव शक्ति ते दुरगंध प्रगटी, मित्र देखाइ उछा हजी ॥ छ० ॥ ६ ॥ ते देखी छए मित्र प्रतिबुझा, सहु गया निज गेहजी ॥ हिवे मल्लि दिक्षा अवसर जाणी, दिये वरसीदान तेहजी ॥ छ० ॥७॥

॥ ढाळ चौथी ॥

श्री जिनप्रतिमा हो जिन सारखी कही ॥ ए देशी ॥

मिगशर सुदि इग्यारस आवीया, तीनसे नर ले साथ । तीनसो नारी हो वली लीधी दीक्षा, छोड़ी सहु घर आथ ॥ मि० ॥ १ ॥ तिण हिज दिन संध्या समय थया, लहियो केवल राज ।ततखिण समवसरण देवे कीधो, सीधा सघला काज ॥ मि० ॥ २ ॥ परषदा बारे ही बैठी तिहां । सुणे धर्म धरि नेह ॥ तिण समे छए मित्र पिण आवीया, ले दीक्षा ताजि नेह ॥ मि० ॥ ३ ॥ अट्ठावीश गणधर स्थापिया जिणवरे, साधु सहस चालीश । साध्वी सहस पचावन जेहने, करे धर्म विश्वावीश ॥ मि० ॥ ४ ॥ सहस चौराशी एक लख श्रावक, श्रावकणी लख तीन ॥ सहस पेंसठ छे ऊपर जेहने, तप जप नी या रीत ॥ मि० ॥ ५ ॥ सहस पचावन आयु पालीने, उपशम धरिय उदार ॥ पर उपकारी हो श्रीजिनवर तणो, नाम लियो

निस्तार ॥ मि० ॥ ६ ॥ पांचसे साधु अढिशे साध्वी, ले साथे परिवार । समेतशिखरे जिनवर चालिया, सुमति गुपति सुविचार ॥ मि० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥

॥ आज हो पट मारा थपायो ॥ ए देशी ॥

मल्लि हो समेतासिखर सिधाया, गिरिवर देखी बहु सुख पाया ॥ सघला साधारे मन भाया । छोड़ी सकल संसारनी माया ॥ म० ॥ १ ॥ पुढवी पद् पर पंकज लीधा, साधारा मन वंछित सीधा । डाभ संथारेसु मन दीधा ॥ धर्म शुक्ल ध्यान साथे लीधा ॥ म० ॥ २ ॥ चौराशी लक्ष जीव खमाया, पाप अढारे दूर गमाया । सिद्ध वधु मिलवा उमाया । पडिलेहि छोड़ी निज काया ॥ म० ॥ ३ ॥ साधवी अंतर परषदा रहिये, वारह परषदा साधुनी कहिये, काउसग्ग करीने काया दहिये ॥ सिद्ध ध्यानसुं शिवपद लहिये ॥ म० ॥ ४ ॥ ऋतु वसंत फागुण सुखदाई, शुक्लपक्ष बारस अतिसाई । अर्धनिशि

जब भरणी आई। तब मल्लिजिन मुक्ति सिरिपाई ॥ म० ॥ ५ ॥ अविनाशी अविकार कहाई। परमय यतेन्द्री सुख लहिये । समाध्यान सरवंग सहाई। परम रस सर्वङ्ग सोहाई ॥ म० ॥ ६ ॥ सिद्ध बुद्ध अविरुद्ध ए कहिये, आदि न कोइ एहनो लहिये॥ जिन वचने कर सर दहिये ॥ अनुपम भावमां सदाही रहिये ॥ म० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥

संवत सतरेसे छप्पने आसुमास उदारए।
प्रतिपदा तिथि शुक्लपक्षे, जेसलमेर मझारए ॥
प्रधान पाठक श्रीकुशलधीरे, गुरुजी सानिद्ध करी।
ए स्तवन कीधो कुशल लाभे, धर्म राग मनमे धरी ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्वामीको सत्तर दालियो ॥

पुरिसादाणी परगडो, जेसलमेर जिणंद।
पंचकल्याणक जेहना, पूजीश परमाणंद ॥ १ ॥
जिनवरना गुण गावता, लहिये समकित सार।

गोत्र तीर्थंकर बांधीये, लहु तरिये संसार ॥ २ ॥
रागभेद रलियामणो, जाणे चतुरसुजाण ।
भाव भगतिगुण भाखतां, जीवित जन्म प्रमाण ॥३॥

॥ ढाल १ ली ॥

राग रामगिरी ।

जम्बूद्वीप मांहे भलु, भरत क्षेत्र । नयरी वणा-
रसी । ऋद्धि विचित्र ॥ जं० ॥ १ ॥ नरपति अश्वसेन
ना ए पूत रामगिरि मनोहरी। देवी वामा कल्प ॥ जं० ॥ २॥

॥ ढाल २ दूसरी ॥

राग देसाव ॥

दशम सुर लोक चवी, भूरि सुख भोगवी चैत्र
वदि चोथ निशिगुण भरया हो प्रभुजी गु० ॥ १ ॥
अश्वसेन राजा घरें, माता वामा उरे। हंस मानस
सुर अवतरया हो प्रभुजी ॥ हं० ॥ २ ॥ चउदे सुपना
लह्या, संत आगल कह्या । राय तिहां फल कहे,
मति विचारीये, अहो सुत विचारीये ॥ ३ ॥ हम कुल

गुणनिलो, पुत्र होसे भलो, दश दिशा खरब ज्युं, उद्योतकारी अहो उ० ॥ ३ ॥

॥ ढाल ३ री ॥

राग सारंग।

अश्वसेन राय के सुत जायो, बामा राणी के सुत जायो ॥ पोस पढम दशमी दिने स्वामी, वंस इक्ष्वाग सुहायो ॥ अ० ॥ १० ॥ छप्पन दिशि कुमरी मिली गायो । नारकीया सुखपायो ॥ अ० ॥ ११ ॥ चौंसठ इन्द्र मिली मनरंगे, मेरुशिखर न्हवरायो ॥ अ० ॥ १२॥ शुभ अनुकुल समीरण वायु ॥ आणंद अंग नमायो ॥ अ० ॥ १३ ॥ थाल विशाल भरी मुक्ता-फल, सारंग वदन वधायो ॥ अ० ॥ १४ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

॥ राग वसंत ॥

सुपन्न पन्नग पेख्यो प्रभुनी सार, प्रभु नाम दियो श्री पार्श्वकुमार । स्वामी नव करतन लीला

वर्ण सोये,॥ १५॥ प्रभावती राणी भरिये गुण अनंत । सुरनर नारी मन माहें वसंत । चित्तमाहें वसंत। सा० ॥ १६॥ भुजंग लंछन रूपे जगत मोह्यो ए ।सा०॥

॥ ढाल ५ मी ॥

॥ राग वइरागी ॥

कमट्ठ कठण तप करत कानन मठ, पंचाग्नि साधे चित वहे अभिमान । कुमति देखाड़ बहु जनको मिथ्यात्व पाडे । तव प्रभु गज चढ़ी आएरी उद्यान॥ क० ॥१७॥ जलतो भुजंग लीधो, परमेष्टि मंत्र दीधो। धरणिंद कीधो—कृपानिधि शुभ ध्यान ॥ क०॥ १८॥ मिथ्यात्व मारग टाल्यो, कमठको मान गाल्यो । लोक देइ राडी तेरो तपरे अग्यान ॥ क० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ६ ट्ठी ॥ श्रीराग ॥

लोकान्तिक सुर आया जंपे जयकार । जिणने जणावे दीक्षा तणो अधिकार ॥ लो० ॥

इग्यारस पोस तणी, प्रभु त्रिभुवन धणी; कर्म छेद न भणी ॥ तजाति संसार ॥ लो० ॥ २० ॥ पंचमुष्टि लोचकरी, प्रभु अणगार हुआ संयम शरीरा गुणवंत भंडार ॥ लो० ॥ २१ ॥

॥ ढाल ७ सातमी ॥ राग कानडो ॥

अमम अमाय अकोह मच्छर नहीं ॥ लवलेस लोभ सनरो, अप्रतिबंध अकिंचन अमदन दायक सकल अभयदानरो ॥ अम० ॥ २२ ॥ सुमति गुपति सोभित मुनिनायक । उपयोग एक धर्म ध्यानरो ॥ पंच इन्द्रिय विषयारस जीत्यो ॥ स्पर्शन रसनं घ्राण चक्षु कानरो ॥ अम० ॥ २३ ।

॥ ढाल ८ मी ॥ राग आशावरी ॥

पासजिणंद स्वामी हो । तोरी अनंत क्षमा ॥ शक्ति थकी तुं सहे उपसर्ग ॥ ततरिवण तोडे कर्म बंधन वर्ग ॥ पा० ॥ २४ ॥ कमठ चढ्यो कोपे

प्रभु ऊपरे, मेघ घटा वरसे जल बहु परि ॥ पा० ॥ २५ ॥ धरणिंद आवी कमठ धिकार्‍यो, जिन आशातना करतो वार्‍यो ॥ पा० ॥ २६ ॥

॥ ढाल ९ मी ॥ राग गुडा ॥

चेत्र पढम चोथ वासरे, जिनवर अट्ठम तप आदरे । प्रभु पासरे । पूरे आशरे ॥ २७ ॥ चार कर्मनो क्षय करी, पामीश निर्मल केवल सिरि ॥ सुर आवेरे ॥ गुण गावेर ॥ २८ ॥ माणकहेम रूपा तणो, विरचे तिगड़ो, सुर जिन तणो ॥ प्रभु सोहे रे, मन मोहेरे ॥ २९ ॥ कुसुम वृष्टि विह संतिया। भांगु डर दुख हंसतिया ॥ प्रभु संगेरे । मन रंगेरे ॥ ३० ॥

॥ ढाल १० दशमी ॥ राग मारू ॥

धन धन ते नरजी, तेहनो जन्म प्रमाण । बारह परषदा मांहि बेसी । श्रवण सुणे तेरी वाणी ॥ ध० ॥ ३१ ॥ तीन छत्र शिर उपरी सोहे,

चामर ढोल इन्द्रजी। गयणं गण सुर दुंदुंभी वाजे, पेखता परमाणंदजी ॥ ध० ॥ ३२ ॥ मालन कौशिक राग आलापत, अमृत वाणी अनूपजी ॥ केवलज्ञानी धर्म प्रकाशे, जीवद्या क्षमा रूपजी ॥ ध० ॥ ३३ ॥

॥ ढाल ११ इग्यारमी ॥ राग गोडी ॥

मोह मिथ्यात्व निंद्रा तजो, जीव जागोरे२, परिहरो पंच प्रमाद ॥ भविक जी० ॥ जी० ॥ जिनवर दे उपदेश, धर्म ध्यान लागोरे ॥ ३४ ॥ डाभ अणी जल बिंदुवो ॥ जी० पडता न लागे वार। भ० जी० ॥ ३५॥ रागद्वेषक पांडुवा जी० मति करजो विषवाद ॥ भ० जी० ॥ ॥३६ ॥ इणिपरे चंचल आउखों, जी० सकल कुटुम्ब परिवार भ० जी० ॥ ३७ ॥

॥ ढाल १२ मी ॥ राग केदारो ॥

सो। वर्ष पाली आउखो, ततीश मुनि परिवार। वगारी पाणी प्रभुरया, मास संलेखणा सार ॥३८॥

जिणंद्राय चढ्योरे, समेत गिरिंद ॥ तिहां पाम्यो रे, परमाणंद जि० ॥ प्रभु श्रावण सुदि आठम दिने, श्रीपास शिवपुर गाम । निज कर्म ततखिण चूरिया, जिके दारुण परिणाम ॥ जि० ॥ ३९ ॥

॥ ढाल १३ मी ॥ राग परदो ॥

तुं अरिहंत अकल, अखल स्वरूपी तुं निराकार । निरंजन ज्योति रूपी ॥ तु० ॥ ४० ॥ ए पिंडस्थ पद रूपस्थ । रूपातीत ध्यान हैरी । ए मन भंग भवि भगवंत ॥ बहु परि दोर हैरी ॥ तु० ॥ ४१ ॥

॥ ढाळ १४ मी ॥ राग सूहव ॥

संसार सागर दुःक्ख जल निवड़ति नर बोहित । शुद्ध भाव समकित वासना । शिव सुख करण समत्थ ॥ ४२ ॥ जिन प्रतिमा जिन सारिखी वन्दनीक । भगति करो निरभिक ॥जि०॥ भगवति ज्ञाता प्रमुख ने । उपदिशी प्रतिमा एह । तो विण जिके माने नहीं, मूढ पशु हुवे तेह ॥ जि० ॥ ४३ ॥

॥ ढाल १५ मी ॥ राग खंभायती ॥

जेसलमेर जीरावलोरे, नागद्रह करे हेडेरे। सोरीसरो संखेश्वरोरे, गोडीपूर दुःख फेडेरे ॥ ४४ ॥ तोरी जागती जगनायक । महिमा जग धणीरे, तुंतो तीर्थे सुख संपति ॥ पूरण सुरमणिरे ॥टेक॥ कलिकुंड आबु अमीझरेरे, फलवर्द्धिपूर जोधाणे रे । तारंगपूर पंचासरेरे, खंभायत वरकाणेरे ॥४५॥

॥ ढाल १६ मी ॥ राग कल्याण ॥

जिनजी मेरो मानव भव आज प्रमाणरे ॥ तुं त्रिभुवनपति सुण्यो जग भाण । भाव भगाति आनन्द माति आणरे ॥ मेरो० ४६ ॥ च्यवन१ जन्म२ दीक्षा३ ज्ञान४ निरवाणरे५ इणपरे पंचकल्याणक जाणरे ॥ मेरो० ॥ ४७ ॥

॥ ढाल १७ सतरमी ॥ (कलश)

इम थुण्यो जेसलमेर मंडण, दुरित खंडण शुभ मने । रस करण दरसन तरणी वरसे,(१६५६)

आदि जिन पारण दिने ॥ जिनचंद सूरज सकल चंदन । मृगमदा केशरी करी । प्रह समय सुंदर पार्श्व पूजे, तेहनी धन्यासिरी ॥ ४८ ॥

श्री शान्तिनाथ जिनस्तवनं

श्री शान्ति जिनेश्वर सोलमारे लाल, शान्ति तणा किरताररे सोभागी ॥ श्री० ॥ आंकणी ॥

नगर हस्थिीनापुर दीपता रे लाल, जाणे अलख स्वरूप रे सोभागी । राज करे रलियामणो रे लाल ॥ विश्वसेन भूवालरे—सोभागी०।श्री ॥१॥ तसतरुणी रानी अति दीपतारे लाल, अचिरा रूप रसालरे सोभागी ॥ सुख सेजांय पोढ्या थकारे लाल पोढंती आवासरे सोभागी ॥ श्री० ॥ २ ॥ गजगति चाले मलकतारे लाल, सुन्दर पियुजीरे पासरे सो० चउदे सुपन्न स्वामी मे लियारे लाल। हुवा हरख अपाररे सो० ॥ च० ॥ ३ ॥ हस्ति वृषभ सिंह दीपतारे लाल । लक्ष्मी पुष्पनी माळरे

सोभागी ॥ चंद सूरज धजा सोभणीरे लाल।
कुंभ कलश सुविचाररे सोभागी ॥ च० ॥ ४ ॥पद्म
सरोवर क्षीर समुरे लाल। बारमे देवाविमानरे ॥
सो० ॥ बे बारणे रत्ने दिवला दीपतारे लाल।
धुम पडिया अति तेजरे ॥ सो० ॥ च० ॥ ५ ॥
राजाजी दीयो बेसणोरे लाल। घणोइ दीनो सन-
मानरे सोभागी ॥ राजाजी पंडित बुलावीयार लाल
। पूछे प्रश्न विचाररे सोभागी ॥ रा० ॥ ६ ॥ सुपना
तो देखी राजा हरखियारे लाल। पुत्र होसी सर-
दाररे सो० ॥ तुम कुल सोभा दीपावसेरे लाल।
हम कुल तणोई आधाररे ॥ सो० ॥ श्री० ॥ ७ ॥
अनुक्रमे प्रभुजी जन्मीयारे लाल। जेठ विदी तेरस
वाररे सो० ॥ कंचन वरणो शरीर छे रे लो। दीपे
दीपे तेज अपाररे सो० ॥ श्री ॥ ८ ॥ छप्पन कुमारी
मिली करीरे लाल। सूतक, कर्म निवाररे सो०।
चोसठ इन्द्र पधारियारे लाल ॥ मुख जंपे जयकाररे
सो० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इन्द्र इन्द्राणी मिली करीरे
लाल। लेगया मेरुरे पासरे सो०। स्नात्र महोत्सव

सुर करेरे लाल। पूजा विविधप्रकाररे सो० ॥ श्री० ॥ १० ॥ भूंगल भेरी अंत घणारे लाल। लावे छे नवी नवी रीतरे सो०। इन्द्र ता ता थई नाचियारे लाल। इन्द्राणी गावे छे गीतरे सो० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इणंद नणंद मिली करीरे लाल, ले गया माताजी के पासरे सो०। राजाजी महोत्सव मंडावीयारे लाल। दे दे दान अपाररे सो० ॥ श्री० ॥ १२ ॥ हस्ती तो दीना राजा घूमतारे लाल। ऊपर लाल अंबा डरे सो०। घोडा तो दीना राजा हींसणारे लाल। मोतीय जडित पलाणरे सो० ॥ श्री० ॥ १३ ॥ सोनो तो दिनो राजा सोभणोरे लाल। रूपा को अंत न पाररे सो०। मोती तो दीना राजा ऊजळारे लाल। श्रीफल तंबोल अपाररे सो० ॥ १४ ॥ थालां तो दीनी राजा ऊजलीरे लाल। दीनी दीनी कनक कचोलरे सो०। मोती तो दीना राजा मोजरारे लाल। दीनी दीनी पंडिताने सीखरे सो० ॥ श्री० ॥ १५ ॥ राजलीला सुख भोगीयारे लाल। भोगता भोग विलासरे सो०। वैरागे मन वालियारे लाल।

ओ संसार असाररे सो० ॥ १६ ॥ राज छोडी संजम लीयोरे लाल। करता उग्र विहाररे सो० ॥ तप तपीया अति आकरारे लाल। जाणे मेरु समानरे सो० ॥ श्री० ॥ १७ ॥ कर्म खपाय हुआ केवलीरे लाल। पहोंता छे मुक्ति मझाररे सो०। कर जोडी कवीयण कहेरे लाल। म्हारी आवागमन निवाररे सो० ॥ मने भवजल पार उताररे सो० मने मुक्ति मारग पोचायरे सो०। मारो जन्म मरण निवाररे सो० ॥ १८ ॥

॥ स्तवन ॥

सोहे सोरठ देशमें, तीरथ उत्तम एह। जात्रा करण आवे घणा, जिहां भविजन गुण गेह ॥ १ ॥ जिण ए गिरि फरस्यो नहीं, नवी निरख्यो नयणेह। शक्ति छता विण अनुभवे, गर्भावास नर तेह ॥ २ ॥ दीपे मरूधर देशमें, फल वर्द्धीपूर सार। तिण के वासी बहु गुण, सुकृत भंडार। ओसवंश अधिक जस, गाडिया गोत्रसु नाम।

राज सभा श्रृंगारक, संघवी राजाराम ॥ २ ॥ लू-
णिया गोत्र सुशोभित, संघवी तिलोकचन्द गिरि-
वरकी महिमा सुण, पायो परमाणंद ॥ कुंकुमपत्रि
भेजके, बोलायो बहु संघ । प्रथम करी पालीपूरे,
रथयात्रा मनरंग । मिरजापूर जेनगरका, किशन-
गड़ावी काण । मेड़ता सोजत नागोर, जेशलमेर
जोधाण ॥ पालीपूर जालोरका, पालणपूर भीन-
माल । संघ समेला संचरे, पाटण नगर विशाल
॥ ७ ॥ तिहां जिनचैत्य जुहारके, देव द्रव्य कर
वृद्धि । शंखेश्वर प्रभु भेटिया, करी आतम गुण
शुद्धि ॥ पाटण राधनपूर तणा, अमदावादी संघ ।
साथ लेइ गिरिनारे भेट्या नेमि उमंघ ॥ श्री जिन-
चंद पटोधर श्री खरतर गच्छनाथ । श्री जिन हर्ष
सूरिसर, बोलाविया निज साथ । खरतर आचारज
युग, श्री जिनचन्द मुनीश । श्री सिद्धसूर कवला
पति, साथे धूरिसु जागीइ ॥ ९ ॥ संवेगी साधु
वली, समयोचित गुणवंत । संघ साथे बहु विचरे,
धरता समतावंत ॥ सामायिक पडिक्कमणादिक

होय जसु संजोग। धर्म तणो उपदेश प्रवर्ते, विघ्न वियोग ॥ १० ॥ कोश वृद्धि पूजादिक, तिहां करके शुभ काज। अनुक्रम विमलाचल गिरि, आया संघ समाज ॥ हाथी घोड़ा रथ बहु, पयदल करत अवाज ॥ संघ तणी रक्षा करे, भय जावे सब भाज ॥११॥ दूर थकी गिरि देखके, माणिक मोती मेह। संघ सहित दुप संघ पति, वधावे गुण गेह ॥ तलहटी यात्रा ओछब करी, फरस्या श्री गिरिराय। ऋषभ जिनन्द जुहारिया, आनन्द अंग न माय॥ १२ ॥ आज भलो ऊग्यो दिन, प्रगट्यो सुकृत आज। आज जन्म सफलो भयो, भेट्या श्री गिरिराज। विविध परे जिनराजकी, पूजा करी उछरंग। गुरू भक्ति साहम्मी वच्छल, करी हरख्यो संघ ॥ १३ ॥ अंबा चक्केसरी गोमुख, कवड जक्ष सुपसाय। मनह मनोरथ सब फल्या, संघ तणा सुख दाय॥ भावशुद्ध करी ए गिरि, फरस्ये जे नरनार। नरकादिक दुर्गति नहीं, पावे ते संसार ॥ १४॥

॥ कलश ॥

इम विमलगिरिवर मौलि मंडण आदि जिनवर संथुण्यो । अट्ठारेसे छासठ माधव, शुक्ल द्वितीया गुण भण्या । श्रीमंत अमृत धर्मवाचक शिष्य निज मनमें धर्या । इण परे क्षमा कल्याण पाठक आत्मगुण निर्मल कर्या ॥

॥ श्री समयसुन्दरजी कृत पोषधव्रतनो स्तवन ॥

॥ दोहा ॥

जेसलमेर नगर भलो, जिहां श्री पार्श्वजिणंद ।
प्रह उठी नित प्रणमता, आपे परमाणंद ॥ १ ॥
तासु चरण प्रणमी करी, पौषध विधि विस्तार ।
पभणिसुं श्रावक हित भणि, आगमने अनुसार॥२॥
पोसो पोसो सहु करे, पोसो करे सहु कोय।
पिए पोसा विध सांभलो, जिम निस्तारो होय ॥३॥

॥ ढाल ॥

॥ प्रभु प्रणमुरे, पार्श्वजिनेश्वर थंभणा ॥ए राह॥

पहिले दिनरे, सांज समे उपगरण सहु,

पडिलेहीरे, रूडी परे राखे बहु। पाछली रातेरे, साधु समीप आवी करी, राइ प्रायच्छितरे, प्रथम करे मन संवरी ॥ त्रुटक ॥

संवरी श्रावक करे पोसो, अट्ठ पोहरी गुरू मुखे।
उच्चरे दंडक तीनवेला, सामायिक पिण तिण मुखे॥
पछे करे पडिक्कमणो, साधु वंदे तिहा कणे।
कर्म भूमी आठमे मंगलिक कुला भणे॥ १ ॥

पडिलेहणरे, अंगहीये सघली करे। उपासरेरे, पूंजी काजो उद्धरे । इरियावहीरे, थापना आगे पडिक्कमे॥ करे सिज्झायरे, साधू साहुने पाय नमे॥

पाय नमे सघला साधु केरे, सुणे सुगुरू वखाण ए।
ध्यान करे अथवा गुणे प्रकरण कहे अरथ सुजाण ए॥
पोण पडिलेहण करीने मात्रा पिण पडिलेह ए।
जल घड़ा लोटी बाटकाने पडिलेहवा वली तेह ए॥२॥

गुरु साथेरे, चैत्य प्रवाडी करे खरी। देव वन्दनरे, शक्रस्तव पांचे करी। उपासरेरे, आइ इरि-

यावहि पडिक्कमे ॥ आगणोरे आलोई नीचा नमे ॥
नीचा नमे बेसणे बैसे, मिच्छामि दुक्कड़ देईने ।
तिविहार हो तो पाणी पीकर मुंहपति पडिलेइने ॥
नवकार गुणतो पाठ भणतां पहोर तीजे दिन रहे।
पडिक्कमी इरियावही पहेली, बहु पडिलेहण करे ॥३॥

धर्मशालेरे, पूंजी इरियावही पडिक्कमे, पाड-लीरे, थापना पडिलेहे समे । मुहपतिरे पडिलेहे ऊभा थई । करे गुरू मुखरे, पच्चक्खाण मन गह गई ॥

पछे देइ खमासमण वस्त्र सघला आपणा ।
पडिलेहवा मात्रा तीण परिचरवलो पुंजण तणा ॥
देहनी चिंता काज जांता करे भगवन आवस्सही ।
मारगे इरियासमिति सोधे, आवता कहे निस्सही ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ बे कर जोडी विनवुंजी, ए राह ॥

हिव भवियणरे तुमे साँभलोजी ॥ गुरूने नमावो शीश । सामायक पोसा तणाजी ॥ दूषण

टालो बत्रीश ॥ वली बत्रीश दूषण वारताने मारने पासे पालठी। करे काम सावज्ज ले उटिंगण आ-लस कर करड़का मोडए॥ खणे खाजी वीसामणि करावे, ऊंघमल कर छोड़ए ॥ ५ ॥ ढाल दश दूषण हिवे मन तणाजी। सांभलजो चित्त एक। अनो-पम अधिक नल हे किरियाजी मनमे नहीं विवेक॥

॥ सुविवेक धन जस लाभ वांछे, करे पोसो विहतो। पोसो करीने करे नियाणो, पुत्र प्रमुख ने इहतो॥ अभिमान रीसे करे पोसो, धरे फल संदेह ए। वली विनय विवेक लिगार न करे, मन दूषण दश एह ए॥ ६॥

वचन तणा दूषण दसेजी, जाणो इणे प्रकार। कुवचन बोलो लोकनेजी। दे दूषण सहिकार ॥

सहसात्कारे कलंक दे वली आपछंदे बोलए। संक्षेप सूत्र करे आलावें कलह करे निटोलए। उपवास करीने करे विकथा मांडी न राखे संपदा

आइ बैठो ऊठो एहवी, कहे भाषा सरवदा ॥७॥
काया वचन मन तणाजी। दूषण ए बत्रीश ॥ टाले
दूषण तेहनोजी, पोसो विश्वावीश ॥
विश्वावीश बोले वली उघाड़े मुख आपणे ।
छूटा ग्रहीसे बात न करे, पांच दूषण परिहरे ॥
उपवास करीने दिवस पोसो न कीधो हुवे तो करे ।
इक पक्ख छोड़ी नहींतो उत्तराध्ययनेआखर अनुसरे॥
चउपहोरी पोसो कह्योजी, सूत्र सिद्धांत विचार ।
हरिभद्र सूरि विवरो कह्योजी, वाइसइ सरसार ।

बाइसे सरसार बोले, दिवस प्रति करिवो नहीं। पोसो अतिथि संविभाग बिहु परव दिवस करीवोसही। दृष्टि शब्द तणे अरथे, सेलंगा चारिज करे। पोसो पजूसण सर्व कल्याणक, तिथि पणे ए आदरे ॥ ९ ॥

उपधाने पोसो कह्योजी, सूत्र निशिथ प्रमाण। दुविहार तिविहार जीमणोजी, एक विगय घृत जाण। आचारणी परंपर पूरवे आचारिज कही ।

भगवंत भाख्यो सत्य एहवो, खांचा ताण करवी नहीं, तिविहार पोसो चार पहुरी, अठपहुरी, सीमकरी तीन गच्छ तणी आचरणी, अवधि छे पण आदरी ॥ १० ॥

॥ ढाल १ ली ॥

कपूर हुवे अति उजलोरे ॥ ए राह ॥

सांझ समे थंडिल करेरे, वारु वारंवार। इरियावहि इम पडिक्कमेरे, जयतिहुण कहे सार ॥ संवेगी श्रावक सांचो पोसो एह। एतो भगवंत भाख्यो तेह ॥ सं० ॥ १ ॥ अरध बिंब रवी आथमे रे, सूत्रे कह्यो सुविचार। तवन कहे तिणाहिज समे रे, तारा दिसे बे चार ॥ सं० ॥ २ ॥ काल बेला इम पडिक्कमेरे, लांबी खमासण देइ। शुद्ध क्रियानी खप करेरे, मन संवेगे धरेइ ॥ सं० ॥ ३ ॥ जिनदत्त सूरि काउस्सग्ग करेरे, पाडिकमणाने छेह। पडिक्कमणो पूरो थयोरे, खरतरनो विधी एह ॥ सं० ॥ ४ ॥ मधुर स्वरे राते करेरं, पोहर सीम

सिज्झाय। गीत गावे वैराग्यनारे, पातिक दूर पुलाय ॥ सं० ॥ ४ ॥

॥ ढाल--मारग देशक मोक्षनोरे, ए राह. ॥

वड़ी वहु पडिपुन्य पोरसीरे, वांदे बेहु उलास। संथारे गाथा भणेरे, खामे जीवां नारासोरे॥ ते नर नारीया सफल करे अवतारोरे। निशी पोसो करे भावना बारे भावेरे ॥ ते० ॥ १ ॥ पाप अठारे परिहरे, चित धरे सरणा चार। डाभ संथारे साथरोरे, ध्यान धरे सुविचारोरे ॥ ते० ॥ २ ॥ धर्म जागरीयां जागतारे, करे मनोरथ एह । संयम लेवां जिण दिनेरे, धन्य दिवस मुझ तेहोरे ॥ ॥ ते० ॥ ३ ॥ संख श्रावक पोसो कियोरे, वीर वखाण्यो तेह तिण परे तिण पोसो कियोरे, तिम करजो सुजगेहो ॥ ते० ॥ ४ ॥ बियंभा पाटणनो धणीरे, नाम उदायनराय। तिण राते पोसो कियो, वीर वन्दन चित लायोरे ॥ ते० ॥ ५ ॥ तुंगिया

नगरीना धणीरे, श्रावक शुद्ध अनेक । तिण विध तें पोसो कियोरे, तिम करज्यो सुविवेकोरे ॥ ते० ॥ ॥ ६ ॥ लख श्रावक पोसो कियोरे, आनन्द ने कामदेव । वलि दृष्टान्त सुवातनोरे मन धरज्यो नित मेवोरे ॥ ते० ॥ ७ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

पाछली राते ऊठीने हो श्रावक होय साव-धान । राइ प्रायश्चित काउसग्ग करे हो, देव वन्दे सुविधान ॥ १ ॥ संवेगी श्रावक हो पोसानी विधी एह मिलती सूत्र सिद्धान्तने हो, मति मन करजो संदेह ॥ सं० ॥ ऊंचे सुर बोले नहीं हो, दोष कह्या भगवंत, वली सामायिक लेवे हो, पडिक्कमण करे तस ॥ सं० ॥ २ ॥ पडिलेहण किरिया करे हो, सघली पूरव रीत । सहु सिज्झाज किया पछे हो, सुगुरु वन्दे धरी प्रीत ॥ सं० ॥ ३ ॥ पहिली पोसो पारिने हो, सामायिक पिण पार । पडिलाभे अण-

गारने हो, अतिथ संविभाग विचार ॥ सं० ॥ ४ ॥ विधि सहित पोसो करे हो, बहु फलदायक होय। अविधि संघाते कीजता हो, काजसरे नहीं कोय ॥सं०॥५॥ पिण विधिनी खप कीजतारे, अविधि हुवे जे कांइ॥ मिच्छामि दुक्कडं दीजता हो, छूटक वारे थाय ॥ सं० ॥ ६ ॥ पोसो ओसो करमनो हो, टाले दुःख। अशुभ कर्म क्षय करे हो, आपे शाश्वता सुख ॥ सं० ॥ ७ ॥ उत्कृष्टि पोसो तणी हो, विधि कही उपगार। जेसलमेरी संघने आगह कियो सुविचार ॥ सं० ॥ ८ ॥ सोलसे बासठ समे हो, नगर मरोट मझार। मागसिर सुदि एकम दिने हो, शुभदिन सद्गुरु वार ॥ सं० ॥ ९ ॥ श्रीजिनचंद सूरिसरू हो, श्री जिनसिंह सूरीश। सकलचंद सुपसायले हो, समयसुंदर भणे शीश ॥सं० ॥ १० ॥

॥ स्तवन ॥

॥ विछीयानी देशी ॥

हांरे लाला संभव जिनवर विनति, अवधारो

परम कृपालरे लाला । जोग क्षेम करणपणो, निज सेंवक जन प्रतिपालरे लाला ॥ सं० ॥ हारे सुक्ष्म बादर भव मांहिने, हुं भमियो काल अनंतरे लाला। दुःख अनंता भोगव्या, तुझ दरशण एकंतरे लाला ॥सं० ॥२॥ हारे० तुझ दरसण मुझ मन वस्यां, संभालु श्वासो श्वासरे लाला । पर सुर पर दरसण तणो, न करुं प्रसंग हुल्लासरे लाला ॥ सं० ॥ ३ ॥ हां० भवभव निज दरसण तणो, मुझ जोग करो महाराजरे लाला। ए मनवांछित माहरो, पूरीजे सुर सिरताजरे लाला ॥ सं० ॥ ४ ॥ हां० संप्राति तुझ प्रसादथी, में पायो दरशन जेहरे लाला, तेहने क्षेम रहो सदा, हुं मांगु छु प्रभु एहरे लाला ॥ ॥ सं० ॥५॥ हांरे० लाला पर उपकारी जगतमें, तुम समवड अवर न कोयरे लाला वांछित पूरण सुर-तरु, तुम सेवित शिवसुख होयरे लाला ॥ सं० ॥ ॥ ६ ॥ हां० अट्ठारे गुणत्तरे, सुदि तेरस माघ सुमा-सरे लाला श्री संघ चैत्य करावियु, अजमेर नगर

हुल्लासरे लाला ॥ सं० ॥ ७ ॥ हां० पधराव्या तिण चैत्यमें, प्रभु संघ सकल उछरंगरे लाला लक्ष्मी लीला हो जिन, सेव्यां बहु पुन्य अभंगरे लाला ॥ सं० ॥ ॥ ८ ॥ हां० सेवक अमृत धर्मनो, उवज्झाय क्षमा कल्याणरे लाला इणविध सुविनाति करूं, करिये संघ कल्याणरे लाला ॥ सु० ॥ ९ ॥

॥ नलखेड़ श्री चन्द्रप्रभु जिन स्तवन ॥

॥ राग--भविकानी देशी ॥

देश मनोहर मालम मांहि, गाम वसे नल खेड़ा । ओसवंशी शुद्ध धर्म के रागी, श्राद्ध वसे बड़भागीरे भविका चन्द्र प्रभु जिन वन्दो ॥ वन्दित होत आनन्दोर, भविका ॥ चं० ॥ टेक ॥ जीर्ण उद्धार कियो जिन चैत्य, संघ मिली बहु भक्ते । पूरण हुवे उद्यापन कीनो, शुभ चड़ते परिणामरे ॥ भ० ॥ चं० ॥ २ ॥ शाल उगणीसो बयासी वर्षे, मृगसिर सुदि शुभ दशमी । वार बुध शुभ लग्न के मांहि,

होय जय जय शब्दरे ॥ भ० ॥ चं० ॥ ३ ॥ सुविहित गच्छ परंपर मांहे, दीपे अधिक अधिक । अंजन शलाका विधिसुं कीनो, रत्नमुनि गुरुरायारे ॥ भ० ॥ चं० ॥ ४ ॥ मूलनायक चंदा प्रभु जिनकी, प्रतिमा तखते राजे अजितनाथ आदि जिनवरकी, प्रतिमा उभय पासरें ॥ भ० ॥ चं० ॥ ५ ॥ विकट कलियुगमें भविजनकुं, जिनमूर्त्ति आधार । भव-दुःख हरणी शिवसुख करणी, भवोदधी पार उत-रणारे ॥ भ० ॥ चं० ॥ ६ ॥ समकित देश सर्व विरती जनकी, ध्यावत होत भवपार ॥ चन्द्रवदनी चन्द्रसम गौरी, देख बूझी दाह तनकीरे ॥ भ० ॥ चं० ॥ ७ ॥ श्री जिनदत्त सूरि सद्गुरूकी, मुरति और पादुका । कुशलसूरि आदि सद्गुरुकी, मुझ मन अधिक सुहायरे ॥ भ० ॥ चं० ॥ ८ ॥ पूजे ध्यावे जे नर भावे, पामे लील विलास । रतनमुनि सद्गुरूको बाल, लब्धि न मेली कालरे ॥ भ० ॥ ॥ चं० ॥ ९ ॥

॥ श्री मंडोदा पार्श्वनाथजीका स्तवन ॥

॥ राग माढ ॥

मंडोदा स्वामी, अंतरजामी, वंदो वारंवार ॥ टेक ॥ अश्वसेन कुल चंदलोरे, वामादेवीको नंद । वनारसीमें जन्म लियेरे, वरत्या जयजय-कार हो ॥ मं० ॥ १ ॥ श्याम वदन तनु शोभतारे, अहि लंछन मनुहार । शत वरसनो आउखोरे, नव हाथ देह प्रमाण हो ॥ मं० ॥ २ ॥ मस्तके मुगट दीपतारे, कानोमें कुंडल सार । वांहे वाजुबंद बेरकारे, गले नवसरयो हार हो ॥ मं० ॥ ३ ॥ सेंधीयासाही राज्यमेरे, मंडोदा गांवके मांय । पार्श्वप्रभुकी प्रतिमा सोहे, आनन्दको नहीं पार हो ॥ मं० ॥ ४ ॥ दूर देशथी आयो चलके, दरसण करवा काज । दरसन करके मग्न हुवा में, टालो भवना पाप हो ॥ मं० ॥ ५ ॥ सभा मंडप मांही मैने निरख्या, कुशलसूरीन्द गुरुराय । कुशल को

करता भवदुःख हरता, वांद्या सद्गुरु राय हो ॥ ॥ मं० ॥ ६ ॥ संवत् उगणीसो त्यासीमारे, पोस वदि शुभ मास । तिथि दशमी दिन भेटियारे, वरत्या मंगल माल हो ॥ मं० ॥ ७ ॥ श्री जिन यश सूरि तणारे, रत्नमुनि महाराज । तेना चरण पसायथीरे, प्रेममुनि गुण गाय हो ॥ मं० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्री दादाजीनो स्तोत्र

श्री जैन धर्मे प्रथित प्रभावः। संसार वासेन विखिन्न चित्त। भव्यात्म संसेवित पाद पद्मो ॥ जीयाद्गुरुः श्री कुशलाख्यसूरिः ॥ १ ॥ स्वप्रज्ञया निर्जित वादि चक्रं, सद्भक्त जीवेच्छित कल्पवृक्षः। सर्वज्ञसिद्धान्त रहस्य वेत्ता ॥ जी० ॥ मिथ्यान्धकारं रवि चद्विधूय। सिद्धान्त वाणी किरणैर बोधि ॥ भव्यात्मपद्मानि जगत्तडागे। येन प्रभुः श्री कुशलः स जीयात् ॥ ३ ॥ भव्याब्धिसंतारग जैनधर्म ॥ निच्छिद्र नौ चालन सुप्रवीणः। प्रचंड-

पाखंड मतान्धकार, विनाशने सूर्यसमः प्रतापी ॥ ४ ॥ त्वन्नाम मन्त्रं मनुजाः सदाये, स्मरंति दोषा न भवंति तेषां । ग्रामे च पूर्यां जलधौ स्मशाने । नद्यामरण्ये दिवसे च रात्रौ ॥ ५ ॥ सौभाग्य लक्ष्मी धनधान्य सौख्य, सत्पुत्र पौत्रादि कलत्र भाजो । त्वन्नाम मंत्र स्मरणाद्भवंति । भव्याः सदा श्री कुशलः सजीयात् ॥ ६ ॥ निर्नाशिता शेषकु वादिमार्गा, माधूर्य वाक्येन युग प्रधानः । भव्या कृतिर्भव्यजना भिरामौ । जीयादूगुरूः श्री कुशला-ख्यसूरिः ॥ ७ ॥ सत्प्रेम दृष्टि गुण रत्न शाशिः, दिशोविसर्पत्सु यशो मुनीन्द्रः । सद्भिर्वरैः सूरि गुणैविराजि । सुवर्ण लब्धिर्जन मोहनश्च ॥ ८ ॥ प्रातः समुच्छाय पठेदिदंयः स्तोत्र पवित्रं कुशला-ख्यसूरेः । भयानि नश्यंति भवंति तस्या, सौ-ख्यानि चेहैव परत्रमोक्षः ॥ ९ ॥

॥ अथ कुशल गुरु देव स्तुतिः ॥

सुखं सर्वा संवत् वसाति पदयोर्यस्य वदने ।

विनिद्रा वार्गीशा हृदय कमले संविददधिकम्। वीरागः सर्वांगे ष्वपि च भगवद्भक्तिरानिशं॥ समृध्यर्थं वंदे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥१॥ निशिखापाधीनं निशादिन मधीनौ समायिनां, परंवाणी लक्ष्म्यौर्निलयमपितद्दाननिपुणौ । सदायौ वर्त्तेते जय इव पाथोजयुगुलं ॥ समृध्यर्थं वंदे० ॥ २ ॥ क्षिपंतौ तौ प्रेक्षांसरासिरूहयोर्यौ मृदुलयो–र्जपा पुष्पा भासोः किशलयजिता शेषमहसोः। लसल्लेखा लक्ष्मप्रकटितपरा श्री सदनयोः ॥ समृध्यर्थं वंदे० ॥ ३ ॥ सुरेभ्यः स्वरथेभ्य कातिपयदिनैर्यः फलमथो। कदाचिद्दतेद्राकश्रियमपि दारिद्रायपरमां । सुरदुत्यक्तोपासतइतिबुधौ यौ भुविगतौ, समृध्यर्थं वंदे० ॥ ४ ॥ सुरैरास्वाद्यंते परमगुरूधर्मोपदिशतः सदाकामंपीतामृतरस वरांशैर पिगिरः। श्रुतायस्य श्रियः श्रियमपिदिशंति स्थिरधियां॥ समृध्यर्थं वंदे० ॥ ५ ॥ निधिसर्वाश्रीणामनाधिकरणौ सर्वविपदां मृदुस्निग्धौ शोणा वुपचितन

खौगूढघुटिकौ । समानो प्रात्तुंग प्रपद्पद् शाखा विलसितौ ॥ समृध्यर्थं वंदे० ॥ ६ ॥ ययौरर्च्चासुते धनसुख धरा धाम रमणिः शरीरा रोग्यत्वं विनय नय विद्यानिणपुतां । गुणा नौदार्यादीन पीतनय लक्ष्मीः श्रितनृणां ॥ समृध्यर्थं वंदे० ॥७॥ भयंकारागारामयसमरपारीन्द्र फणभृन्महापारावारः द्विरद्वनवेश्वानरभवम् ॥ नडाकिन्याद्युग्रग्रह गरलजत्यत्समृणतः ॥ समृध्यर्थं वंदे० ॥ ८ ॥

इत्थं श्री जिनपद्म सूरि रचितं दिव्वाष्टकं सद्गुरौः, पुण्यं मंत्र मयं मनोज्ञ फलदं पापौघ विध्वंसनम् ॥ भक्तयाः यः पठति प्रभात समये, सर्वत्र तस्य ध्रुवं । वश्याभूपतयो भवंति सततं लक्ष्मीश्चिर स्थायिनी ॥

॥ इति समाप्तं ॥

॥ श्री सद्गुरुभ्योनमः ॥

गुणै गांभीर्या द्यैर्विजित जलधेः श्रीखरतरः । सुरगच्छीय श्रीमोहन मुनिगुरोः सेवनपरः । अभुद्यः

सद्भक्त्यापदकमलयोः श्री गुरुजिन ॥ "यशः सूरिर्मह्यं वितरतु सदासोऽतुल सुखं" ॥ १ ॥ मरुदेश श्री योधपुर नगर स्थामल विसौ–सवाल ज्ञातीये जति सुशमिनो यस्य जननं॥ समे संवच्चक्षु र्विधुखगविधौ श्री गुरुजिन ॥ यशः० ॥ २ ॥ मुदा-यस्याख्यांजेठमल इतितस्मातृजनका । वकाष्टौ यो बाल्येप्यजनि कुशलोर्हत्प्रगदिते । क्रियाद्यानु-ष्टाने खरतरतपः श्री गुरुजिन ॥ यश० ॥ ३ ॥ समीपाद्यो श्री मोहनमुनि गुरोर्धर्ममलं । निश-म्योच्चैः शिष्यो जनि गगनदिशां केंदु समये । गृही त्वादीक्षांयोधपुर नगरे श्री गुरुजिन ॥ यशः० ॥४॥ सदागुर्वाज्ञाष्ट प्रवचनजनी पालन परो । गुणैः कांतोमूलोत्तर गुणरुचि, श्री मुखात् । क्रमाज्जातोयः श्री जिन समयवित् श्री गुरुजिन ॥ यशः० ॥५॥ विधाप्यास्मैयोगोद्वहन कमदापीभशरनंद चन्द्रा-ब्दे पंन्यास पदममलंराजनगरे । समीपात्पूज्यैः पंपदधर मुनेः श्री गुरुजिन ॥ यशः० ॥ ६ ॥ अभूद्य-स्याब्दे नंदरस खगकौ सूरि पदवी । हिमक्ष्मूदावादे

शूचितर तपः शोषित तनुः । लसत् षटत्रिंशत्सू-
रिगुणगणभृत् श्री गुरुजिन ॥ यशः० ॥ ७ ॥
मुदा यः कृत्वा श्री चरमजिन निवाण परिपूत । पा-
पापूर्यां व्योम–मुनिखगकौ देव निलयं । गतो
द्वापंचाशाद्दिनमनशनं श्री गुरुजिन ॥ यश० ॥८॥

॥ अथ बीजनीथुई ॥

पूर्व विदेह पुखलावइ विजये, श्री पुंडरिकणी नयरीजी । ऋद्धिसिद्धि नवनिधि अनर्गल, निर्जर-पुरी सुखकारीजी। कनक कमल सुर निर्मित ऊपर, चरण धरे जिणंदाजी, सीमंधर जिन वीजे दरशण, करता पामे आनंदाजी ॥ १ ॥ पर संयोग अनि-त्यता जाणी, सुख विभावी निकामिजी । ज्योति रूप निज भाव संभारी, भाव क्षायक अभिरामीजी। जगजन संशय व्यूह निकंदी आपे निजगुण धामीजी। भाव धरी त्रिभुवन जिन नमतां जिन सुख आनन्द

पामीजी ॥ २ ॥ भव भ्रम धर्म समाबन जलधरो, भूमि चेतन शुभ कारीजी। समकित बीजे फूल्यो तरुवर, उत्तर गुण दलसारीजी अनुभव ज्ञानामृत फल उत्तम, भविजन हर्ष वधाईजी ॥ जिनप्रवचन निज रमणे रमतां, चेतनता प्रगटाइजी ॥ ३ ॥ जिनवर आनन पंकज कोशे, विकाशित नित्य निवासीजी । अनुपम रूप लावण्य शिरोमाणि, सकल कळा सुविलासीजी ॥ सुमति आपे भारती देवी, ज्ञान ध्यान सुख कंदोजी । नव निधि वाचक चारित्र नंदी, पामे परम आनंदोजी ॥ ४ ॥

॥ पंचमीनी थुई ॥

पुरी पुंडीरकणी समवसरणगत, भाषे श्री जिनरायाजी । सूरसेन नरपति उपदेशे, पंचमी तप बतलायाजी ॥ चउविहार व्रत मुनि मुख करिये, ज्ञान भक्ति वली कीजेजी । एह उपदेशक सीमंधरजिन, पंचमी तिथि प्रणमीजेजी ॥ १ ॥ आश्रव पंच अवरोधन करके, पंच संवर गुण

धारीजी । पंचेन्द्रिय सुख विषय तजिने, पंच सुमति लहे भारीजी । लोका लोक प्रकाशक पंचम ज्ञान दिवाकर जायाजी । पांचम तिथि जिन पंच कल्याणक, प्रणमुं शिवसुख दायाजी ॥ २ ॥ रजत कनक मणि पाटा ऊपर, पुस्तक सहु स्थापीजेजी । थापनाचारिज ठवणी आगल, मंडल नंदी रचीजेजी ॥ पुस्तक पूजी थापनाचारज, नंदी पूजन कीजेजी ॥ सुदि पांचम इणविध जिन प्रवचन, शुभ श्रावक सेवीजेजी ॥ ३ ॥ कार्तिक सुदि पंचमी तिथि रूडी, तप करिये शुभ भावेजी । पंचानुत्तर पद भोगवी, पंचमी गति सुख पावेजी ॥ खरतर नवनिध वाचक चारित्र, थापे हर्ष अपारोजी । नित प्रति जसु शासनसूरि आपे, ऋद्धि सिद्धि सुख सारोजी ॥ ४ ॥

॥ अष्टमीनी थुई ॥

भवारि निवारण, परमाणंद गुण गेह । अर्जुन कनक प्रभ, वज्रमणिच्छविदेह ॥ भवि जन हित

हे ते, अष्टमी तप प्रकाश । चन्द्रप्रभु जिनवर, प्रणमु चन्द्र प्रभास ॥ १ ॥ दस त्रिक सांचव करुं जिनवर मन्दिर जाय । द्रव्य भावें पूजा, करिये चित हुलसाय ॥ सहु दुरित विहंडन, भव भव पाप पलाय । त्रिभुवन जिन नामिये, नुतर शिव सुख दाय ॥ २ ॥ आठम दिन करिये, मुनि सुव्रत चउ-विहार । आठ पहरी पौषध, कीजे मद परिहार ॥ आठे मंगल कारण, सेवीजे सुखकार। जिन आगम पूजिये, धारी चित्त मझार ॥ ३ ॥ चक्री सुख भोगवी, केवल ज्ञान निपाय । श्रीखरतर गच्छ, नवनिधि उदय पसाय ॥ अष्टमी तप करता, वाचक चारित्र नंदी । तसुजिन भृकुटी सुर, सानिध करे सुख कंदी ॥ ४ ॥

एकादशीनी स्तुति.

श्री अरनाथ संजम आदरियो, नमिजिन केवली जायाजी । मल्लिजिनेश्वर जन्म प्रव्रज्या, केवल ज्ञान सुभायाजी ॥ मगासिर सुदि एकादशी

रूडी, भविजन शिवसुख दायाजी। तिण कारण अर नमि मल्लीजिन, प्रणमीजे चित्तलायाजी ॥१॥ भरते ऐरवत दशखेत्रे इम गिणता, पंचाशत कल्याणोजी। पंचाशत त्रिक काले गिणता, नम शरशशिमित जाणोजी। काल अनंत करी इमहिज गणता, कल्याणक सेवंताजी, सुदिग्यारस जिनध्यान धरंता, पामे लाभ अनंताजी ॥२॥ सुदि एकादशी चउविहार व्रत, पौषध अठ्ठ पहरी लीजेजी। पुस्तक देखी डेढसो कल्याणक, थिराचित जाप जपीजे जी ॥कर्म निकाचित कर्दम रविकर, शमपरिणाम ग्रहीजेजी। त्रिकरण कर जिन प्रवचन पूजत, निर्मल बोध लहीजेजी ॥३॥ इग्यारे वरस इग्यारस तप कर, उजमणो वली कीजेजी। दिनदिन अधिकी भावना भावो, संपद सहज वरीजेजी। खरतर गच्छ नव निधि उदयकर, वाचक चारित्र नंदोजी। शान्तिद्ध करे जसु शासन देवी, आपे श्री सुख कंदोजी ॥ ४ ॥

दीवालीनी थुई ॥

चउद सहसमुनिवरगण साथे, गाम नगर विचरंताजी। छेहलो चउमासो हस्तिपाल नृप, शुक्ल शालाये करताजी ॥ पावापुरी अमावस कार्तिक, नागकरन स्वाति योगोजी. वीर जिनेसर शिवपुरलीनो, प्रणमो ते भवि लोगोजी ॥१॥ तिण अवसर नवदुगुणा भूपति, पौषधव्रत सम भावेजी सोले प्रहर लग देशना सुणंता, अनुभव जोग रमावेजी ॥ त्रिभुवन नायक जग जन बंधु, चिंतामणि जग त्राताजी। सयल जिनेश्वर भावे प्रणमुं, ज्ञानामृत घट दाताजी ॥२॥ नंदीश्वर पावन्न जिनालय मंडल विपुल रचीजेजी। पूजाकर जिन बिंब सनात्रे, पंचामृत करकीजेजी ॥ संजम ज्ञान निवाण कल्याणक, भावे जाप जपीजेजी। दीवाली तप सूचक आगम, नित प्राति भवि सेवीजेजी ॥३॥ वीर चरित मुनि मुखथी सुणता, भवभव पाप पलायेजी। काति अमावस तप आदरता, संपदा सहज

निपावेजी। खरतर गच्छ नवनिधि सुपसाये, वाचक चारित्र नंदोजी। देवदेवी जसु शान्ति सिद्धायिका, आपे शिव सुख कंदोजी ॥४॥

जग जग मन मोहन, पुरुषसिंह निरभिक। गुणमणि रयणकर, पुरुषोत्तम पुंडरीक ॥ भविकजन लंकृत, दिनकर कर परकाश। अहनिशि त्रिकरण कर सेवुं, चित्त चिंतामणि पास ॥ १ ॥ चउविह सुर नरपति, भक्ति भर इग चित्त। अविचल सुख काजे, सेव परम पवित्त। जे अतीत अनागत, वर्त्तमान जिनराय, ते नितप्रति प्रणमुं, परमानंद सुखदाय ॥ २ ॥ भवजलधि अगाधे, दृढतर प्रवहण जान, रिपुवर्ग विहंडन आपे शिवसुख खान। नयभंग निक्षेप, स्याद्वाद मतसार। शुद्ध पराणति भासे, जिन प्रवचन चित्तधार॥ ४ ॥ पद्म सम राजे, सरसति रूप उदार। पउमावइ देवी, जिनशासन सुखकार ॥ खरतरगच्छ वाचक नवनिधि उदय कराय। सुखसंपति आपे, चारित्रभणि सुपसाय ॥४॥

॥ श्री सिद्धचक्र थुई ॥

शुभ भावे वन्दो, सिद्धचक्र सुखकंद। जेहना जप तपथी, भाजे भव भव फंद। श्रीपालने मयणा, विधिथी ए तपकीध ॥ नवपदथी पामे, अष्ट सिद्ध नव निद्ध ॥ १ ॥ जिन सिद्ध आचारज, पाठक श्री मुनिराज। दर्शन ज्ञान चारित्र, नवमे तप कहेवाय; एक एक पद ध्यांता, जीव तरया संसार। चौवीस जिन प्रणमुं, कीधो भवि उपकार ॥२॥ आसु वली चैत्र मास, सुदि सातमथी जाण। ओली कीजे शुभ मन, आंबिल कर पच्चक्खाण। पद पदनो गुणणो, कीजे भाव जगीश। आगम मांही बोल्या, ध्यावो तुम निशदीश ॥ ३ ॥ विमलादिक देव, देवी चक्केसरी माय। सिद्धचक्रना सेवक, आपे वांछित दान ॥ खरतरगच्छ दिनकर, श्री जिन अखय सूरींद। तस चरण पसाये, भाखे श्री जिन-चंद ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री जिनराज कृत वहरमान जिन वीशी लिख्यते ॥

पोपट चाल्यो रे परणवा ए देशी ।

मुझ हियड़ो हे जालूउ, भाखर गिण इन भीत । आवे जावे रहे एकलो, करवा तुमसु प्रीत ॥ श्रीमंधर करजो मया ॥ १ ॥ धरजो आविहड़ नेह ॥ अमची अवगुण जोइने, रखे दिखायो छेह ॥ श्री० ॥ २ ॥ तुमची भगत घणु घणा, अणहुंते इ ककोड़ । अमची मींटन को चढे, साहेब तुमची जोड़ ॥ श्री० ॥ ३ ॥ दक्षिण भरत अमे रहुं, पुष्फ-लावती जिनराज । कोइक दिन मिलवा तणो, दीसे छे अंतराय ॥ श्री० ॥ ४ ॥ दीधी देव न पाँखड़ी, आवुं केम हजूर । पिण जाणजो मोरी वन्दना, प्रह उगमते सूर ॥ श्री० ॥ ५ ॥ कागलियो लिखुं कारमो, कीजे सी मनुहार । अमची एहिज विनती, आवागमण निवार ॥ भव जल पार उतार ॥ श्री०

॥ ६ ॥ परम दयाल कृपाल छो, करजो अवसर सार ॥ श्री जिनराज इसुं कहे, मत मूकोसुविचार ॥ श्री० ॥ ७ ॥

ढाल दूसरी

अवला केम उवेखिये ए देशी ।

सैमुख हु नसकुकही, आडीआवेलाज । रहि-पिणनसकुं बापजी, इम किम सिझे काजोरे ॥ वीरा चांदला। तुं जाइस तिण देशोरे ॥ श्री मंधर भणी ॥ कहि जो मुझ संदेशो रे ॥ वि० ॥ २ ॥ तुं अंतर जामी अछे, जाणे मननी वात । तो पिण आश न पूरवे, एसी तुमची धातोरे ॥ वी० ॥ ३ ॥ में तो कर वामो दिशा, तुमसु अविहड स्नेह । फल प्राप्त सारू हुवे, पिण मतदाखो छेहोरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ तेहने कही समझाविये, जे हुवे आप अजाण । पिण जिनराज समो अछे, अवर न एवड़ो जाण रे ॥ वी० ॥ ५ ॥

ढाल तीसरी

मन मधुकर मोहीरयो ए देशी ।

बाहि समापो हो बाहुजी, जिम मो मन थिरथाय रे । जिण तिण बाह विलंवता, मान महातम जायरे ॥ बा० ॥ १ ॥ सबला रे शरणे पड्या, गंज न सके कोइ रे । पाधरसी सरणे पड्या, कारज सिद्ध न होइरे ॥ बा० ॥ २ ॥ तुम सरिखो थाय वलुं ॥ कर पखो जगनाहरे ॥ तोनाण, सुपनांतरे. हुं केहनी प्रवाहरे ॥ बा० ॥ ३ ॥ शरणागत वच्छल तुमे, हुं शरणागत सामरे । जेम माने हो ते करुं, स्युं कहिये लेइ नामरे ॥ बा० ॥ ४ ॥ जो सेवक कर जाणसो, तो इतलो मुझ राजरे ॥ मीठाई मोटा तणी, जीविजे जिनराज रे ॥ बा० ॥ ५ ॥

ढाल ४ चौथी

॥ करजोड़ी आगरही, ए देशी ॥

सामी सुबाहु जिणन्दनो, जइये मुख निरखे

सनेरे । सकल मनोरथ मालिका, तइये सफल करेसनरे ॥ धर्म जागरीया जागतां ॥ १ ॥ समरंता गुण ग्रामनरे ॥ पांणी वली एहवु रहे, माहरे मन परणामनरे ॥ ध० ॥ २ ॥ आमिअ समाणे बोलडा, बारह परषदा साथनरे ॥ सांभल भवथी ऊभगी, व्रत लेशु प्रभु हाथनरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ जन्म लगे पासे रही, भगत करीस निश दिशनरे ॥ तप जप संजम खप करी, मन सुध विसवा वीशनरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ आपण पे जाइ गोचरी, आणीस शुद्ध आहारनरे ॥ साधु सहुने सांचवी, देइस देह आधारनरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ चार कर्म चक चूरने, पामीश केवल नाणनरे ॥ श्री जिनराज पसाउले, चढस्ये बोल प्रमाणनरे ॥ ध० ॥ ६ ॥

ढाल ५ पांचमी

॥ धन धन आदर कुवार संजमी ए देशी ॥

तुं गति तुं मति तुं सांचो धणी, तुं बंधव तुं तात । तुज सम अवरन को मुझ वालहो सम

संसार सुजात ॥ तुं० ॥ हरिहर ब्रह्मादिक आरा-
धतां, न टले गर्भावास । तिण इण भव कीधी में
आखड़ी, शीश नमावण तास ॥ तुं० ॥ २ ॥ जे
पोतपरनी आशाकरे, तेस्युं पुरे आस। संतोष्यो प्रिण
रांक न देसके, अविचल लील विलास ॥ तुं० ॥ ३ ॥
अंतरगत सुमनसु अलोकतां, ए कीधो निरधार ।
तुझ विण देव न को बीजो अछे, शिव सुखनो
दातार ॥ तुं० ॥ ४ ॥ करो महर भव जल थल
हर थकी, प्रवहण सम जिनराज । जो करी ग्रह
सेवक ने तारस्यो, तो हिज रहसी लाज तुं० ॥ ५ ॥

ढाल छट्ठी

देशी हमीरियानी

स्वामी स्वयं प्रभु साँभलो, करो निवाजिस
काज । जगजीवन विरूद गरीब निवाजनो । जिम
जगपुंड थिर थाय ॥ ज० ॥ सां० ॥ १ ॥ पोताना
अरियण हण्या, तिण अरियण कहंत ॥ ज० ॥
जो मुझ अरिदल निरदलो, तो सांचो अरिहंत ॥

ज० ॥ सां० ॥ २ ॥ तुं स्युं तारे तेहने, जे सूधा अणगार ॥ ज० ॥ तारक विरूद् खरो करो, तो मुझ सरीखो तार ॥ ज० सां० ॥ ३ ॥ अंतर जामी माहरो, तुं किण कारण होइ ॥ ज० ॥ अंतरगत लेवा भणी, कागल न दियो कोय ॥ज०॥ सां० ॥४॥ नेह गहेला मानवी भाखे, तिम भासंत ॥ ज० ॥ भारीखिमा जिनराजजी । कहने छेह न दहंत ॥ ज० ॥ सां० ॥ ५ ॥

ढाल ७ सातमी

आज धुराउं वांधलो. ए देशी ।

में तो ते जाण्यो नहीं हो साहिब । जेसो तुमसु रंग। तोहि छांड न को सके, हो० पाणी वली तुझ संग ॥ १ ॥ कोडे ज्ञानहें जाल्रवो । तुझ सांचो ससनेह ॥ फेरहेलो ते नको दीयो हो० तो पिण तुझसु नेह ॥ को० ॥ २ ॥ आदर मान न को दियो हो० ॥ करे न को वगसीस ॥ तो पिण ऊभा उलंगे हों० इन्द्रादिक निश दिश ॥ को० ॥

३ ॥ ए म्हारो ए पारको हो० करे न कोइ विचार ॥ तो पिण आवी न जूडे हो० आगल परषदा वार ॥ को० ॥ ४ ॥ सुख दुःख पिण पूछु नहीं हो० तो पिण तुम सु प्रीत ॥ ऋषभानन सहु को कहे हो० ए तुझ नवली रीत ॥ को० ॥ ५ ॥ नयणे नयण निहालता हो० मोहे सहु असमाज। आपण पे अलगो रहे हो० मोह थकी जिनराज ॥ को० ॥६॥

ढाल ८ आठमी

रूडो म्हारो गुरूजी कलपडो ॥ ए देशी ॥

अनंतवीरज में ताहरो, नाम सुण्यो जिन-राज। हिव जिम तिम बल फोरवी, आपो अवि-चल राज ॥ अ० ॥ १ ॥ जो हुं जोवुं मो दिशा। तो न मिले तिलमात। पिण तो चिंतवतां सहुं, वैर पडेसी वात ॥ अ० ॥ २ ॥ जे में कीधी नव नवी, करणी क्रोड प्रकार। तिण हुंति प्रभु छोडवो, तो हुंवे छूटक वार ॥ अ० ॥ ३ ॥ भवसायर विहामणो, जिहां किण वाटने घाट। तुं तारे तोहिज तरू,

सबला ऊजड वाट ॥ अ० ॥ ४ ॥ छोडुं सहु उछा-छला, कोड़ विणासे काम। पिण मावित न मिटसके, जिम तिम पूरे हाम ॥ अ० ॥ ५ ॥

ढाल ९ नवमी

आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए राह ॥

आपण पे हुं आवी न सकुं, मूक्यो छे परधानजी। जो साचीसी सेवा सारे, तो राखे ज्यो मामजी। "मुझ मन तुम चरणे लय लीनो." जिम मधुकर मकरंदजी। पाणी वली थिण घास न छांडे, लीनो गुण मकरंदजी ॥ मु० ॥ २ ॥ चपल पणे चूकस्यो तो पिण, मत छोडावो तीरजी। तुरत उत्तर आपे तटकी, गिरूवा हुवे गम्भीरजी ॥ मु० ॥ ३ ॥ वीजा ने बगसीस करंता, मतमुको विसारजी ॥ पतिवंचक ऊपर हो पातिक, अवर न छे संसारजी ॥ मु० ॥ ४ ॥ वात सहुनो परमारथ, साँभल स्वाम विसालजी श्री जिनराज निराशय करजो, करजो कांइ संभा-लजी ॥ मु० ॥ ५ ॥

ढाल १० दशमी

मेघमुनि कांइ डमडोल्योरे ॥ ए देशी ॥

कीजे छे जेहने सहुजी, वचनें वन्धन प्रमाण । ते जो आपण पे मिलेजी, तो हुंवे कोड कल्याण ॥ १ ॥ "सुर प्रभु अवधारो अरदास, जिम तिम पूरो मोरी आस॥ सु० ॥" देइ तीन प्रदक्षणाजी, आणी अधिक जमीश । प्रभु आगल ऊभो रहिजी, प्रश्न करूं दश वीश ॥ सु० २ ॥ वली पूछु हिवे केटलोजी, भमवो छे संसार। आँधीना सेटे पडयोजी, भमता नावे पार" सू० ॥ ३ ॥ पोतानी करणी पखेजी, तारी न सकेस्वाम। पिण वाटे वहतां सहुजी, पूछे केतलो गांम॥ सू० ॥ ४ ॥ जिण दिन प्रभु दर्शन हुस्ये जी, लेखे पडस्ये तेह। धन दिन ते जिनरा-जनोजी, इण पर बोले जेह ॥ सू० ॥ ५ ॥

ढाल ११ इग्यारमी

जोसीडा सोवन मुरकी कानमें ॥ ए देशी ॥

एक सबल मननो धोखो टल्योरे, लाधो

साहिब चतुरसुजाणरे। जे हुं भगत कर सते जाणस्येरे, वज्रधर केवलनाण प्रमाणरे ॥ ए॥ १ ॥ दूर थकी पण जो साचे मनेरे। समरण करस्युं वार विचाररे ॥ तो पिण ते आहिलो जास्ये नहींरे, फलस्ये भव २ प्रकाररे ॥ ए० ॥ २॥ अंतरगत अंतर जो मिलेरे, ते प्रभु साचो सुखनो बीजरे। जे गुणने अवगुण जाणे नहींरे, ते स्युं करवो निशादिन धीजरे ॥ए० ॥ ३ ॥ चूक पडे जो किणही वातनोरे, तो पिण न धरे तिलभर रीसरे। तूसे पिण कदयें रूसे नहींरे, ए मुझ प्रभुनी अधिक जगीश ॥ ए० ॥४॥ ते तो कहिये नाहिन कीजियेरे ॥ जेहने आठ प्रहर अंधेररे ॥ श्री जिनराज अवरसू मिढतारे ॥ मेरू अने सरसवनो फेररे ॥ ए० ॥ ५ ॥

ढाल १२ बारमी

॥ वैरागी थयो ए देशी ॥

समाचारी जूजईरे, आवे मन संदेह । सीसा-

चीकर सरद्हुंरे, सवल विमासणा ए होरे ॥ १ ॥ चंद्रानन जिन । कीजे कवण प्रकारोरे । इण दुःष-मआरे । में लीधो अवतारोरे ॥ च० ॥ २ ॥ आगम बल तेहवो नहीं रे, संशय पड़ असदिव । सूधी समझ न को पड़े रे, भारी कर्मोंरो जीवोरे ॥ चं० ॥ ३ ॥ इष्ट राग राता अछेरे, केहने पूंछुं जाय । आपणपो थापे सहुरे, तिणमो मनड़ो लायोरे ॥ चं० ॥ ४ ॥ विहरमान जिन साँभलोरे। खारिय मिलण मनखंत होवे दरसन जिनराजनोरे, तो भांजे मन भ्रांतोरे ॥ चं० ॥ ५ ॥

॥ ढाल १३ मी ॥

॥ आयो म्हारी संहिया गच्छपति ए राह ॥

जोवो म्हारी आई उण दिश चालतो है ॥ कागलियो लखदीजे हो । अंतरजामी थी अलगा रह्या हे, कागळयाहि कीजे हे ॥ जो० ॥ १ ॥ साहि-बीयो तो छे वैरागीयो हे, फेर जबाव न देसे है, पण प्रभुनी सेवामांहे रह्या है । सहिजे काज सरे-

सहे ॥ जो० ॥ २ ॥ साहिबने अमची खपका नहीं है, पिण छे गरज अमारे हे। जो साचीसी भगत कहाविश्येहे, तो भवजल निध तिर हे ॥ जो० ॥३॥ साजनीया पिण दूर गजे दिये हे, तिण थकी दूर रहिजे हे ॥ जो छोड़ावे गभावासती है, तिणसु सकनिमीलीजे है ॥ जो० ॥ ४ ॥ नाम जपीजे श्री चन्द्रबाहुनो हे, निश दिन ध्यान धरीजे हे। तेस लहीजे करी जिनराज नोहे, जिणकर लेख लिखीजे हे ॥ जो० ॥ ५ ॥

॥ ढाल १४ चउदमी ॥

॥ आबु शिखर सुहामणो, ए देशी ॥

स्वामी भुजंग मत्ताहरो, नाम जपे सहु कोइ। पिण तेहनी पर ते तजी, तिण मुझ अचरिज होइ ॥ स्वा० ॥ १ ॥ तुं सपगोपग रोपने, चढे बोल प्रमाण। आगम वचन तुं चले, न चले हिया त्रांण ॥ स्वा० ॥ २ ॥ तुं गयवर गति चालतो, न धरे तिल भर वांक। मोर गरूड सेवा करे, नाणे केह निशंकः

॥ स्वा० ॥ ३ ॥ दो जिहो प्रिण तुं नहीं, न धरे विष लवलेस ॥ अमिय समाणे बोलडे, दे सहुने उपदेश ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ अथवा नाम भुंजगमें, साच कहे कवीराज ॥ अवर सहु सर्प लोटिया, तुं मणिधर महाराज ॥ स्वा० ॥ ५ ॥

॥ ढाल १५ पंदरमी ॥

॥ वीर वरवाणी राणी चेलणाजी ए देशी ॥

नेम प्रभु माहरी विनतिजी, साँभलो धर्म धूरीण । फेरवो तुझ विचे तेहवोजी, को नहीं जाण प्रवीण ॥ नेम० ॥ १ ॥ हुं प्रभु दास तुं मुझ धणीजी, आपणे सगपण एह ते भणी स्युं कहि दाखवुंजी, जगति जाणो करो तेह ॥ नेम०॥ २ ॥ भगति तुझ अवर धारा तरेजी ॥ आसण अपूजता जाय ॥ आपवि मासीने जोइजोजी, लाभ तो केह न थाय ॥ ने० ॥ ३ ॥ प्रारथिया पहिडे नहींजी उत्तम एह आरा निपट उवेखा मूके नहींजी, नेटकाइं करे सार ॥ ने० ॥ ४ ॥ आपणे उत्तरे जिहां रहेजी, अवर

करे नहीं स्वाम । ते जिनराज निवाजियोजी, आपणो अवसर पाम ॥ ने० ॥ ६ ॥

॥ ढाल १६ सोलमी ॥

॥ परतिख पास अमिझरो ए देशी ॥

ईश्वर जिन वैरागीयो, रागीथी अधिक कदि वाजेरे । जिनपरि प्रभु वखाणीये, ते परि सगली तुझ छाजेरे ॥ ई० ॥ १ ॥ तु क्रोधी क्रोधे चढयो, अरियणना कंद निकंदेरे। अभिमानी सिर सेहरो, तुं चाले आपणी छंदेरे ॥ ई० ॥ २ ॥ मायावी माया रची, सहु को नाम न वंचेरे । तुं लोभी गुण में लही, लाखे ज्ञाने ले संचेरे ॥ ई० ॥ ३ ॥ सेवक पिण पोता तणो, तु जोव निजर न देईरे । देइ कान न साँभले, किणहीनी वात कदेईरे ॥ ई० ॥४॥ अलख अगोच्चर तुं जयो, किणहि तुझ अंत न पायोरे । भगत वच्छल जिनराजियो, पिण जिनराज कहायोरो ॥ ई० ॥ ५ ॥

॥ ढाल १७ सतरमी ॥

॥ वहिली नवलण करजो इण ढशमें रे ए देशी ॥

मुझ ने हो दरसण न्याय न तु दिये हो, नवली छे मुझ रीत । जे सुं हो तुमसे निशदिन रूसणो हो, म्हारे तिण सु प्रीत ॥ मु० ॥ १ ॥ जेहने ते वनयासी दीयो हुं तो हो. धरतो नवि विश्वास । तेहने हो आदरसुं तेडायने हो, में राख्यो ले पास ॥ मु० ॥ २ ॥ जिणसु हो कांइं मिटन मेलतोरे, करतो कुरूप सदीव । में तिणसु एंकारो मांडियोहो, लागो म्हारो जीव ॥ मु० ॥ ३ ॥ वयण न लोपे तुं पिण जेहनोरे, काम कहुं पिण. तेह । न्हाक नमन पिण न करूं तेह ने हो, परित अछे मुझ होय ॥ मु० ॥ ४ ॥ मुझ करणी सामुं नवि जोइये हो, वीर-सेन जिनराज । पर दुःख काटण विरूद विचारने हो, दरसण दो जिनराज ॥ मु० ॥ ५ ॥

॥ ढाल १८ अढारमी ॥

॥ वेग पधारो हो रंगमेंलथी ए देशी ॥

सै मुख साहिबने मिल्यां ॥ फेर पडे न

तुज कोइ ॥ उलगड़ी अलगा रह्या, संदेसड़े न होइ ॥ १ ॥ देवजसा दरसण दिए, ए मुझ खरा अरूहाडी। अतुल बली जिम तिम करी, एह प्रमाणे चाड़ी ॥ दे० ॥ २ ॥ जो छोरू कर जाणसो, तो पूरवस्यो लाड़ अलवेसर इण वातनो, मत जोणो को पाड़ ॥ दे० ॥ ३ ॥ मननी वात सहु कहु, जो भेटु जगनाथ। कहिवो छे मुझ वसु, करिवो छे तुम हाथ ॥ दे० ॥ ४ ॥ वहती वात सहु कहे, पर पूठे जिनराज। पिण मुंहडेन मिटी सके, दीठा आ वेलाज ॥ दे० ॥ ५ ॥

॥ ढाल १९ उगणीशामी ॥

मनमोहन। ए देशी।

लही मानव अवतार, गुरू मुख त्रिविध त्रिविध उच्चरूं, न पले निरतिचार, परभवनो डर तिलभर नवि धरुं ॥ १ ॥ ए प्रभु आगल जे वीतक सवि भाषिये, मनका सल कूडकपट सो राखिये, ॥ ए० ॥ २ ॥ पर अवगुण चिहुं मांही, आणी सांक

न कामे भाषिया। दीधा कूडा कलंक, पोताने स्वारथ अण पूजते ॥ ए० ॥ ३ ॥ दुं परने उपदेश, आगम वचने अति आकरु। जाणे लोक महंत। पिण ते मूल न आचरू ॥ ए० ॥ ४ ॥ एक अछे आधार, सर्दहणा सांची प्रभु ऊपरे। महा भद्र जिनराज, ते प्रभु जे सेवकने उधरे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ ढाल २० वीशवीं ॥

॥ सुखदाई रे, ए देशी ॥

मिलि आवोरे, मिलि आवोरे। श्री अजित-वीर जिनगुण गावोरे ॥ मि० ॥ अति सुस्वरस ध्वस हेली रे। मेन मेलु भुगत गहेली रे, मिथ्या मति दूर रहेली रे। बेसो दश वीश सहेली रे ॥ मि० ॥ १ ॥ प्रभु परतिख नयणा न दीसे रे, मेलो न दियो जगदीशे रे। परपूठे ध्यान धरीसे रे। तो पिण भव जलनिधि तरीसे रे ॥ मि० ॥ २ ॥ रावण विणाधरी खंधे रे। जातो गुण विध प्रबंधे रे। तूटी तं तन संधे रे। तिण गोत्र तीर्थंकर बंधे रे ॥ मि०

॥ ३ ॥ चित्ते भगती वेसी पूरीजे रे, तो अशुभ कर्म चूरीजे रे। शिवपुर नेहत्थो दीजे रे। मानव भव लाहो लीजे रे ॥ मि० ॥ ४ ॥ तेहिज जिहास लहीजे रे। प्रभुनो सुजस कहिजे रे। जिनराज सखाई कीजे रे ॥ मन वांछित सुख पामीजे रे ॥ मि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल २१ इकवीशमी ॥

लोक क्ष्वरूप विचारो आतम हित भणी। ए देशी.

वीश जिणेसर जग जयवंता जाणीये रे। अढाई द्वीप मझार ॥ धन ते गाम नगर पूर प्रभु विचरता रे, साधु तणो परिवार ॥ वीश० ॥ १ ॥ वासुदेव बलदेव भगति नित सांचवे रे। लहिवा भवजल तीर ॥ चौराशी लक्ष पूर्वनो आउखो रे, गुण गिरुवा गम्भीर ॥ वीश० ॥ २ ॥ वृषभ लंछन सोभित तनु अवगाहना रे, पणसय धनूष प्रमाण। समवसरण बारह परषदा प्रतिबोधता रे। जगगुरू अमृत वाण ॥ वीश० ॥ ३ ॥ धन धन ते जिहा

प्रभु गुण गाइये रे, आणी मन आणंद। धन धन ते दिन जिण दिन भावे भेटिये रे। विहरमान जिणचंद ॥ वीश० ॥ ४ ॥ खरतरगच्छ जुगवर जिनसिंह सूरिन्दने रे, शीश धरिये जगीश ॥ श्री जिनराज वचन अनुसारे थुण्यो रे। विहरमान जिनवीश ॥ वीश० ॥ ५ ॥

॥ श्री देवचन्द्रजी कृत श्री शत्रुंजयगिरि स्तवनं ॥

भरत निज भावसुं ए। ए देशी

शत्रुंजय गिरि भेटिये ए, भेटिये कर्म किलेश। नमो गिरिराजने ए॥ मिथ्या दोष निवारवाए, धारवा समकित देश॥ नमो० ॥ १ ॥ काल अनादि भवोदधिए, भमता भव समुदाय ॥ न० ॥ ध्यान पात्र सम जाणजोए। एहिज तीरथराय ॥ न० ॥२॥ मानव भव पामी करीए, ए तीरथ गुणगेह ॥ न० ॥ जेणे नवि भेट्या जुगतिए, ते दुःखीया मांहे रेह ॥ नमो० ॥ ३ ॥ इहां सिद्धापण कोडीसुए, गणधर श्री पुंडरीक ॥ न०॥ चैत्र शुक्ल पूनम दिनेए, निज

सत्ता गुण ठीक ॥ नमो० ॥ ४ ॥ फाल्गुन सुदि सातम लह्यो ए, नमिवि नमीये शिवथान ॥ न० ॥ चौसठ नमि पुत्री वरूए, आठमे केवलज्ञान ॥ न० ॥ ५ ॥ सागरमुनि तीन कोडिथीए, कोडिथी मुनि श्री सार ॥ न० ॥ तेरे कोडिथी शिव वरूए, सोमश्री अणगार ॥ "सेवो गिरिराजनेए" ॥ ६ ॥ ऋषभ वंशी आदित जशाए। तसु सुत आदित्य क्रांति ॥ नमो० ॥ एक लाख परिवारसुंए, पाम्या परम प्रशांत ॥ सेवो० ॥ ७ ॥ ऋषभवंशी मुनिवर बहुए, गणधर कोडि असंख ॥ न० ॥ शिव पहोंता सिद्धाचलेए, निरममने निरकंख ॥ से० ॥ ८ ॥ दश कोडिथी शिव लह्युंए, द्राविड़ने वारी खिल्ल ॥नमो०॥ चउद सहस निग्रंथथीए, दमि तारा निसल्ल ॥सेवो० ॥ ९ ॥ आदिनाथ उपगारथीए, कोडी सत्तर अणगार ॥ न० ॥ अजितसेन मुनिसरूए, पाम्या सुख अपार ॥ से० ॥ १० ॥ आनन्द राक्षित भावनाए, भावता शिवपुरपत्त ॥ न० ॥ कालासी इग सह-

स्सथीए, मुनिसुभद्र सयसत्त ॥ से० ॥ ११ ॥ रामचंद्र पण कोडिथीए, नारदमुनि पीसताल ॥ नमो० ॥ पांढव कोडि वीशथीए, शिवपोता समकाल ॥ सेवो० ॥ ११ ॥ सांब प्रद्युम्न मुनिसरूए, मुनि साड़ात्रण क्रोड़ ॥न०॥ विमलाचले निरमल थइए, ते प्रणमुं बे कर जोड ॥ सेवो० ॥ १३ ॥ थावच्चा सुत शुकमुनिए, सेलग पंथक सिद्ध ॥ नमो० ॥ वासुदेव घरणी शिव लहयुंए, सहस्त्र पांत्रीश प्रबुद्ध ॥ सेवो० ॥ १४ ॥ वैदरभिनि कर्मताए, सामिसल चोफाल ॥ नमो० ॥ श्री वासुसार अनंतताए, पामी गुण संभाल ॥ सेवो० ॥ १५ ॥ सिद्धा बहु मुनि इण गिरिवरेए, यादववंश अनेक ॥ नमो० ॥ श्रेणिक कुल साधु साधवीए, सिद्ध थया थिर टेक ॥ सेवो० ॥ १६ ॥ विद्याधर भूचर घणाए, इहां पाम्या गुण कोड़ी ॥ नमो० ॥ आतम हेते एहनीए, कोण करी सके होडि ॥ सेवो० ॥ १७ ॥ तिवारे तीरथ पतिए, ए तीर्थे बहुवार ॥ नमो० ॥

आव्या भविजन तारवाए, निरनम निरहंकार ॥ सेवो० ॥ १८ ॥ पुंडरीक गिरिनी सेवनाए, जेह करे भवि जीव ॥ नमो० ॥ ते आतम निर्मल करीए, पामे सुख सदैव ॥ सेवो० ॥ १९ ॥ ए गिरिराजने सेवताए, देवचन्द्र पद लहे सार ॥ नमो० ॥ भव भव ए तीरथ सेवनाए, होजो परम आधार ॥ सेवो० ॥ २० ॥

॥ कलश ॥

इम सकल तीरथ नाथ शत्रुंजय, शिखर मंडण जिनवरो, श्री नाभिनन्दन जग आनन्दन विमल शिव सुख आगरो । शुचिपूर्ण चिदघन ज्ञान दर्शन सिद्ध उद्योत शुभ मने ॥ निज आत्म सत्ता शुद्ध करवा, वीरजिन केवल दिने ॥ श्रीसुविहित खरतरगच्छ जिनचन्द्रसूरि साखा गुण निलो । उवझाय वरे श्रीराजसागर, शीश पाठक सिरतिलो । श्री ज्ञानधर्म सुशिष्य पाठक राजहंस गुण वरोः । तसु चरण सेवक देवचन्द्रो विनव्यो जगहित करो ॥

॥ श्री सिद्धगिरिराजनो लघु स्तवन ॥

चालो मोरी सहियाँ श्री विमलाचल हे। जिहां श्री ऋषभजिणंद हे। पूर्व नवाणुवार, समोसर्या है। केवलज्ञान दिणंद है ॥ चा० ॥ १ ॥ शुद्ध तत्व रसीया बहु मुनिवरू है, किध अयोगी भाव हे ते संभारी नमता नीपजे है। निरमल आत्म स्वभाव है ॥ चा० ॥२॥ पांच कोडीथी मासी अणसणे है, पुंडरीक मुनिराय है, चैत्री पूनम सिद्ध थया तिणे है, पुंडरीक गिरि कहेवाय है ॥ चा० ॥ ॥ ३ ॥ विधिसुं जे सिद्धाचल भेटसे है, करी उत्तम परिणाम है। नीमा भव्य कह्यो ते जिणवरे है, ए तीरथ अभिराम है ॥ चा० ॥ ४ ॥ सुरनर किन्नर गुण गावे मुदा है, प्रणमे प्रहसमे, रीझे है। देवचन्द्र ए तीरथ सेवता हे, सकल मनोरथ रीझे है ॥ चा० ॥ ५ ॥

॥ श्री पार्श्वजिन स्तवन ॥

पारस तोरी निरखण दे असवारी, अरजी सुणो प्रभु म्हारी ॥ पा० ॥ टेक ॥ काशीदेश वणारसी नगरी, दिन दशमी जयकारी । वामाराणी कूँखथी प्रभुजी, जन्म लियो सुखकारी ॥ पा० ॥१॥ छप्पनदिग् कुमरी हुलराया, हर्ष हिये अति भारी। चौसठ इन्द्र करे वली महोच्छव, तरवा भवजल पारी ॥ पा० ॥ २ ॥ एक क्रोढ साठ लाख सोहे छे, कलश महा मनुहारी । बारे जोजन पोला पेटे, पच्चास जोजन ऊंचा धारी ॥ पा० ॥ ३ ॥ नीचा ऊंचा जोजन पहोला, निर्मल भरियो वारी । फूल चंगेरी बावनाचन्दन, केशरनो धमसारी ॥ पा० ॥ ४ ॥ इणिपरे ओच्छव सुरपति कीनो, जोइजो सूत्र संभारी। सुर गिरि ऊपर पांडुक वनमें, पांडुशिला। अति भारी ॥ पा० ॥ ५ ॥ अश्वसेनराय उत्सव कीनो, दान दीयो दिल धारी ॥ शेरनी श्रेष्ठता जूवे जुक्के, बैठा गोख मझारी ॥ पा० ॥ ६ ॥ लोक

सहु पूजापो लहिने, कमठ पूजनकारी । प्रभु पधा-
र्या देखण काजे, नाग जले तिण वारी ॥ पा०
॥ ७ ॥ काष्ट फड़ावी नाग निकाल्यो, संभलाव्यो
मंत्र भारी ॥ समकित लइने सुरपति हुवो, धर-
णेन्द्र एकावतारी ॥ पा० ॥ ८ ॥ उगणीसे इगतालीश
वर्षे, पोष दशमी रढियाली । आहोर नगरमें उच्छव
कीनो, संघ सकल बलिहारी ॥ पा० ॥ ९ ॥ सुन्दर
मुरति प्रभुनी विराजे, भविजन कुं सुखकारी ।
कीर्तिचंद सम सोभे जगमें, केशरमुनि जयकारी
॥ पा० ॥ १० ॥

॥ श्रीनेमप्रभुकी बारेमासी (निहालकी) ॥

राजूल ऊभी विनवे रे पिया, सुणजो नेम
कुंवार । आप पोते संयम लीयो रे वारी, जाय
चढ्या गिरनार ॥ अब घर आजा जादव नेमजी
रे ॥ १ ॥ टेक ॥ खुंद कोइ दाख्यो नहीं रे पिया,
लीधो संजम भार ॥ ली० ॥ बिन अवगुण पिया

परहरी रे वारी, चूक वतावो भरतार ॥ अब० ॥२॥ आशा विलुद्धी में रही रे पिया, हुंस रही मन, हुंस० मनमाय ॥ दिन जावे पिया वरस ज्युं रे वारी, छ गुणी रात, छ० गणाय ॥ अब० ॥ ३ ॥ भूखा तो भोजन चाहे रे पिया, तिसिया चाहे ति० नीर ॥ में तो तुमको चाहतहुं रे वारी सांभल नेमकुंवार ॥ अब० ॥ ४ ॥ मेहलां वरसे मेहला रे पिया, आभा चमके ॥ आ० ॥ वीज ॥ तुम क्यों रूषीने रह्या रे वारी, आई श्रावणरी ॥ तीज ॥ अब० ॥ ५ ॥ श्रावण आयो साहिबा रे वारी, गाज रह्यो घन ॥ गा० घोर ॥ बूंद लागे पिया वाहरी रे । वारी जादव लियो चित्त ॥ जा० चोर ॥ अब० ॥ ६ ॥ नेनिजिणंद पाछा वल्या रे वारी आयो भाद्रव ॥ आयो० मास ॥ दादुर पीपैया बोलिया रे ॥ दा० वारी प्रीतम नहीं मुझ पास ॥ अब० ॥ ७ ॥ नैने नींद आवे नहीं रे पिया, आयो मास ॥ आयो० आसोज ॥ नेमि मुझ मूकी गया

रे वारी अब किम माणु पिया मोज ॥ अब० ॥ ८ ॥ कार्तिक कंत न बाहुल्या रे पिया, ऊभी जोवुं ऊभी० वाट ॥ म्हेल पधारो साहिबा रे पिया सूनी हींडोला खाट ॥ अब० ॥ ९ ॥ मगसर वैरी आ-वीयो रे पिया, देवण लागो ॥ देवण० दुःख ॥ ऊंडे पड़दे पिया पोढव्या रे वारी, सर्व गया मुझ सुख ॥ अब० ॥ १० ॥ नेमजिणंद पाछा वल्या रे वारी आयो रे पापी आयो० पोसो तुम क्यों गिरि बेसी रह्या रे वारी, अबही छोड़ो पिया रोस ॥ अब० ॥ ११ ॥ माह महिनो आवीयो रे पिया, वाजे शीतल ॥ वाजे० वाय। शीयाले की रैन मेरे, वारी वालम आवे दाय ॥ अब० ॥ १२ ॥ ठंड पडे देह काँपती रे पिया, नहीं नणदलरा नहीं० वीर ॥ रातही काडुं रोवती रे पिया, आसुडे भींजो चीर ॥ अब० ॥ १३ ॥ फागुण पिया आवीयो रे वारी, सबको मन ॥ स० हरखाय । में फागुण पिया केम रमुं रे वारी, वालम गयो वनमांय ॥ अब०

॥ १४ ॥ चैतज मासज चमकियो रे पिया, फूल्यो सब वन ॥ फू० राय । फूलीह तिरिया कामणी रे वारी, कन्त पियो सुखदाय ॥ अब० ॥ १५ ॥ वैशाखा वेलू जलेरे पिया, दाझे तनसुख ॥ दाझे० माल ॥ कामणगारो कंथजी रे, वारी, वेगा आय संभाल ॥ अब० ॥ १६ ॥ जैठ तपे लू आकरी रे पिया, पूछ सकी नहीं । पूछ० वात । गिरिगुफा विराजिया रे, वारी, जादव नेमिनाथ ॥ अब० ॥ १७ ॥ आषाढी आछी तरे रे बारी, छोड्यो सब छोड्यो० संसार । तीनसया परिवारसुं रे, वारी, पहोंती गड़ गिरनार ॥ अब० ॥ १८ ॥ राग भरी राजीमति रे वारॉ, लीधो संयम । लीधो० भार । चउपन दिन पेला गइरे । वारी, पहुंता मुक्ती मझार ॥ अब० ॥ १९ ॥ सदगुरू साचा भेटियारे वारी, अमरचन्दजी, अ० गुरूराय । रूपचंद पाये नमीरे, वारी, राखो मुझ चरणा रे पास ॥ अब० ॥ २० ॥ चिहुं एक नव जाणीये रे वारी, भला

इग्यारे भला० गणधर । श्रावण मास तिथि अष्ट-मीरे वारी, चन्द्रवार सुखकार ॥ अब० ॥ २१ ॥ मरुधर देश मांहे अछेरे वारी, नाम सुख, नाम० चंद श्रावक तो सब सुखी वसेरे वारी, करे धर्मका काम ॥अब० ॥ २२॥ झरमर वरसे मेहलारे वारी, चिहुं दिशि चमके, चिहुं० वीजराजूल ऊभी गोखड़ेर वारी, मदन करत मनखीज ॥अब०॥२३॥

श्रीधन्ना अणगारनी सिज्झाय ॥

एक दिन वीरवाणी सुणीनेरे धन्नो, आयो जननी पास, कहे जिनधर्म जाण्यो सही ए माता, काल जाये श्वासोश्वास ॥ "माता हुंतो लेशुं है, जननी लेशु संजम भार। ए संसार असार छे माता लेशु संजम भार" ॥ टेक ॥ १ ॥ शीयालामें शी घणो धन्ना, उनाले लू झाल । चौमासे झड़ वाद-लीरे धन्ना, ए दुःख किम सहे बाल ॥ धन्ना हुंतो वारीरे जाया, मत लेवो संजम भार ॥ २॥ हिमाले

पंखी रहे ए माता, किम सेसी शितकाल। चौमासामे घर नहीं माता, बैसे पांखड़ा ढार ॥माता०
॥ ३ ॥ वन में तो रहेवो एकलोरे धन्ना कुण करे थारी सारथे दुःख कांइ देख्यो नहींरे धन्ना, संजम विखम अपार ॥ धन्ना० ॥ ४ ॥ वनमें तो रहेवे मृगला ए माता, कुण करे वांरी सार। चरे फिरे सुखमे रहे माता, दुःख छे न लिगार ॥ माता० ॥ ५ ॥ भूख तृषा छे दोहिलीरे धन्ना, नहीं मिले सूझतो आहार। असूजतो मुनि लेवे नहींरे धन्ना, संजम खांडानी धार ॥ धन्ना० ॥६॥ भूख तृषा नहीं दोहली ए माता, दोहिलो नरकनो दुःखा सुर वैदना में सही माता, नहीं लियो सुख लिगार ॥ माता० ॥ ७ ॥ पाय अलवाणे चालणोरे धन्ना, माथे सहणोरे ताप ! घर घर भिक्षा मांगणीरे धन्ना, एह बड़ो संताप ॥ धन्ना० ॥ ८ ॥ माथे ताप सह्यो घणो ए माता, अलवाणे कई वार। भव भव में भमतो फिरयो ए माता, नहीं लियो सुख लिगार ॥माता०

॥९॥ लोच हुवे अति दोहिलोरे धन्ना, थें छो अति सुखमाल गुरू आणामें चालणोरे धन्ना, संजम नहीं छे खियाल ॥ धन्ना० १० ॥ लोच नहीं छे दोहिलोए माता, दोहिलो गर्भ भंडार। शूल वेदना में सही माता, संसार में नहीं सुख ॥ माता० ॥ ११ ॥ पातरामाहिं वेरणोरे धन्ना, खावणो का चलीमांह। नित्य भूमिये सोवणोरे धन्ना, धरिये न दुःख मन मांह ॥ धन्ना० ॥ १२ ॥ वार अनंती जीवड़ो ए माता, जीम्यो ठीकर खंड। शूली वर सूतो रह्यो माता, नरक में सही बहु ठंड ॥ माता० ॥ १३ ॥ धन्न घणो घर मांहिनेरे धन्ना, ए सुखलेणी नार। छोड्यासे पछ तावसोरे धन्ना, मेरु ज्युं संजम भार ॥ धन्ना० ॥ १४ ॥ धन्नरे वे घर मांहिनेरे ए माता, नारी देसी छोड़। चारित्र तो चिंतामणि ए माता शिवरमणी रो मोड़ ॥ माता० ॥ १५ ॥ नित ऊठी घोडला फेरतारे धन्ना, नित ऊठी वागा जाय। ए बत्तीसी राणीयारे धन्ना, ऊभी रही विलखाय ॥

धन्ना० ॥ १६ ॥ नित ऊठ घोड़ला फेरताए माता, नित ऊठी वांगा जाय। ए बत्तीशी राणीया ए माता, निश्चय नरक ले जाय ॥ माता० ॥ १७ ॥ तुं मुझ आंधा लाकड़ीरे धन्ना, जे कोइ टेको होय। जो लाकड़ी टूटी पड़ेरे धन्ना, अंध खराबी होय ॥ धन्ना० ॥ १८ ॥ रत्न जड़तरो पींजरो ए माता, सूओ जाणे छे फंद। काम भोग संसारना ए माता, दीसे छे दुःख दंद ॥ माता० १९ ॥ माताने सम-झायनेरे धन्नो, जावा लागो जा म ताम आवीने वीनवेहो पिउ, हाथ जोड़ीने शाम ॥ पिउ मति जावोरे, मति जावो छोड़ी नार" ॥ २० ॥ घणे आडं-बर परणिया हो पिउ, भोगवो भोग रसाल। झटके छोड़िने चालिया हो पिउ, ऊठे छे मनमें झाल ॥ पिउ० ॥ २१ ॥ वार अनंती परणीया ए प्यारी, तुम सरिखा घणी नार। छोड़ी छोड़ीने चालिया ए प्यारी, कोइ न आवी लार ॥ "प्यारी म्हेंतो लेशांए, प्यारी लेशां संजम भार" ॥ २२ ॥ भर यौवन सुख भोगवो

हो पिऊ, प्रत्यक्ष सुख छे एह छोड्या से पछतावसो हो पिऊ, करसणी ज्युं चूके मेह ॥ पिऊ० ॥२३॥ में तो कांइ चूका नहीं ए प्यारी, तुम चूका प्रत्यक्ष । सुख छे थोड़ा कालनो ए प्यारी, पीछे मारसी जक्ष॥प्यारी० ॥ २४॥ म्हें तो जाणाछां आपने हो वि० लालच लागो छे जेह । मोक्ष नारी नहीं दीपती हो पिऊ, मोक्ष छे म्हारी देह ॥ पिऊ० ॥ २५ ॥ मलमूत्रनी थारी देहड़ी है प्यारी, मोक्ष छे सिद्ध स्वरूप । इतरा दिन भोले रह्यो ए प्यारी, में जाण्यो अंध कूप ॥ प्यारी० ॥ २६ ॥ एम कही धन्नो चालियोरे धर्मी, आयो प्रभु के पास । संजम लहीने सीखवे धर्मि, नित करे अंग सिझाय ॥ " शिरोमणि साधुजी, कहेवाणा तपसी सार " ॥ ॥ २७ ॥ अणसण कर अनुतर गयाजी, वरत्या छे जय जयकार ॥ शिरोमणि० ॥ समयसुन्दरजीनी विनतिजी, मान लीजो म्हाराज ॥ शिरो० ॥२८॥

॥ जंबु कुअरकी सिज्झाय ॥

जंबु कयो मानलेरे जाया, मत ले संजम भार ॥ ए आठोइ कामणीरे जंबु, अप्सरारे उणि यार । परणाने कांइ परिहरोरे, थांरो किम निकलेरे जमार ॥ जं० ॥ १ ॥ ए आठोइ कामणीरे जंबु, तुझ विण विलखी थाय । रवि आथमीये किम सरे यारों, वदनमुखी कमलाय ॥ जं० ॥ २ ॥ मन हीना छे मानवी माता, मन मन ने भरपूर । रूपे रमणी जो रमे माता, जस दुरगति छे नहीं दूर ॥ माता० ॥ ३ ॥ पाली पोसी मोटो कियोरे जाया, इम किम दे छटकाय । माता पिता झूरे घणा थारे, दया नहीं दिलमांय ॥ जं० ॥ ४ ॥ छिन्नु क्रोड़ सोनैया हुंताजी, श्री श्रीभंडार मांय, नन्याणु क्रोडनो दायजोरे जाया, धन आवे छे आज ॥ जं० ॥ ५ ॥ एक लोटो पाणी पीयो माता, मात पिता छे अनेक । सघलारी दया पालसु माता, आप

समान छे लेख ॥ माता० ॥ ६ ॥ ए आठोइ कामणी जाया, सुख विलसो संसार । दिन पाछा पडिया पीछे जाया, भले लीजो संयम भार ॥ जं० ॥ ७ ॥ रत्नजडितरो पींजरो माता, सूवो जाणे छे फंद । काम भोग संसारना माता, ज्ञानी वतावे छे फंद ॥ माता० ॥ ८ ॥ तु मुझ अंधा लाकड़ी जाया, तु मुझ प्राण आधार । तुझ विन म्हारे जग सुनो जाया, तुझ विण घड़ीरे छमास ॥ जं० ॥ ९ ॥ मात पिता मेलावड़ो माता, मिलिया अनंति वार । तारण समरथ को नहीं ए माता, मातपिता परिवार ॥ माता० ॥१०॥ पंचमहाव्रत पालणो जाया, पांचोइ मेरू समान । वावीश परीसह जीतनारे जाया, चारित्र खांडानी धार ॥ जं० ॥ ११ ॥ ए आठोंइ कामणी जंबु, समझावी एकण हात । ए जिनरो धर्म ओलख्यो, एतो लेसे संजम भार ॥ जं० ॥ १२ ॥ मोह मति करो माताजी, माता, मोह कियो बंधे कर्म । आडा कांइ फिरो थें तो, करोजी

श्रीजिन धर्म ॥ माता० ॥ १३ ॥ मात पिताने तारिया जंबु, तारी छे आठोंइ नार । सासु सुसराने तारीया जंबु, तारया छे पांचसो चोर "जंबु भले चेतीयो जाया, भले ले संजम भार" ॥ १४ ॥ पांचसो सतावीस सु जाणसुं, लीधो छे संजम भार । इग्यारे जीव मुक्ते गया, ए तो वरत्या छे जय जयकार ॥ जंबु० ॥ १५ ॥

॥ क्रोध की सिज्झाय ॥

क्रोध कियो आछो नहीं, आलतां लक्ष्मी नासेजी । दुःख दारिद्र घरमें धसे, कोड़ोना पाप उपार्जेजी ॥ "क्षमारे किया सुख पामीजे" ॥ ओ भाख्यो श्री जगदीशोजी ॥ जे सुख चाहो जीवको थे, कोइमत करजोरीसोजी ॥ १ ॥ गाल वेचीजे राडमें, लाडु नहीं वेचीजेजी । वालोपिण वैरी हुवे, इसड़ो काम न कीजेजी ॥ क्ष० ॥ २ ॥ बाप बेटो भाई भाई, सासु वहु गुरू चेलाजी । क्रोध थकी

उछल पड़े, न जाणे नेडी सगाईजी ॥ क्ष० ॥ ३ ॥ क्रोधी नर कालो पड़े, आसखरी वात विगाड़ेजी॥ आगोरे पीछो जोवे नहीं, लाखीणी प्रीत घटावेजी ॥ क्ष० ॥ ४ ॥ कोइरे वचन करड़ो कहे, अथवा ते आघो पीछोजी ॥ द्व ने दाध्ये ने पांगरे, नहीं पांगरे वचनोरो विंध्योजी ॥ क्ष० ॥ ५ ॥ ज्यारे घरमें एक क्रोधी सघलाने संतापेजी । ज्यारे घरमें सघला क्रोधी ज्यारां किसा हवालाजी ॥ क्ष० ॥ ॥ ६ ॥ तपस्या तपे ना रिसरे, आ आंखमा मरच किम आंजेजी । तपस्या विणासे क्रोधथी, आ दूध विणासे कांजीजी ॥ क्ष० ॥ ७ ॥ क्षमारे किंवा शंका महीं, आगे फल लागे आछाजी । खंधक ऋषि क्षमा करी, बेनोइ खाल उतारीजी ॥ रायप्रदेशी देखने, ओ ततक्षण लीधो मोक्षजी ॥ क्ष० ॥ ८ ॥ समयसुन्दर कहे क्रोधने, तमे दीजो देसोटोजी । क्रोध तजे शिवपुर लहे, पामे भवनो पारजी ॥ ॥ क्ष० ॥ ९ ॥

॥ अथ बारे व्रतनी सिज्झाय ॥

गौतम गणधरजीरे पाँय नमीजे, सद्गुरूजीरी वाणी काने सुणीजे ॥ " इणिपरे श्रावक बारह व्रत लीजे " ॥ लीजे लीजे ने जिनवर पूजीजे ॥ बारह व्रतनी टीप लिखि जे ॥ इणि० ॥ १ ॥ पहिले जीवद्या पालीजे ॥ तो निरोगी काया पामीजे ॥ इण० ॥ २ ॥ दूजे मृषा झूठ न बोले, तोछतो अछतो आल न दीजे ॥ इण० ॥ ३ ॥ त्रीजे अदता चौरी न कीजे, तो पडि वस्तु हाथे न लीजे ॥ इण० ॥ ४ ॥ चोथे चोखो शील पालीजे, तो रत्न पावड़ाये मोक्षपद लीजे ॥ इणि० ॥ ५ ॥ पंचमे परिग्रह परिमाण कीजे । तो पांचे इन्द्रिय पोते वश कीजे ॥ इण० ॥ ६ ॥ छेट्टे दिशिनी मर्यादा कीजे, तो छः कायजीवाने अभयदान दीजे ॥ इणि० ॥७॥ सातमे भोगोपभोग कहिजे, तो छाति समर्था आहार तजीजे ॥ इणि० ॥ ८ ॥

आठमे अनर्थ दंड न कीजे। तो आठ कर्म यो क्षय कीजे ॥ इणि० ॥ ९ ॥ नवमे सामायक व्रत करीजे, तो अव्रतीने आहकारी न दीजे ॥ इणि० ॥ १० ॥ दशमें देशावगासिक करीजे ॥ तो एका-सण वेग ध्यान धरीजे ॥ इणि० ॥ ११ ॥ इग्यारमे पौषधोपवास करीजे। तो व्रत लिया पछे खंड न कीजे ॥ इणि० ॥ १२ ॥ बारमे अतिथि संविभाग करीजे। तो साधु सम्यक्त्वीने सुजतो दीजे ॥ इणि० ॥ १३ ॥ संलेषणाको पाट भणिजे, तो पादु पक्षण अणसण कीजे ॥ इणि० ॥ १४ ॥ दश श्रावक संथारो कीनो ॥ तो अगरवती परभती काउस्सग्ग कीजे ॥ इणि० ॥ १५ ॥ श्रीविनयमुनिजी इणिपरे बोले। तो नहीं कोइ साधु समकितीनी जोडे ॥ इणि० ॥ १६ ॥

॥ परनारी गमन निषेध सिज्झाय ॥

नर चतुर सुजाण, परनारीसुं प्रीत कबु न कीजिये ॥ सुण वाला सेण, देख पराइ नार हरख नवी कीजिये ॥ सांझ पड़े दिन आथमे, तेहनो जीव भमरा परे भमे । वली घरनो कारज नइ गमे ॥ ॥ न० ॥ परनारीसु प्रीतड़ली, क्षण एक लागे मीठड़ली; पीछे तोड़े भवनी प्रीतड़ली ॥ नर० ॥२॥ तान मोदन प्यालो पायदेसी, थारा शस्त्र वस्त्र खोसी लेसी; थारा हाथमें हाँडी देइदेसी ॥ नर० ॥ ३ ॥ थारो जोबन लेसी लूटीने, थारो धन लेसी सब खुटीने; पछे रोसी हियड़ो फूटीने ॥ नर० ॥४॥ जोबन हारीने कांइ करस्यो, देहीनो देव तुमे हरस्यो; पछे दुरगति मांही जाइ पडसो ॥ नर० ॥५॥ उदयरत्नकी सीखड़ली, तुम चाखो अनुभव सुखड़ली। एहथी भांजे भव भूखड़ली॥ नर० ॥६॥

॥ अथ नेमनाथजीनो स्तवन ८ वारनो ॥

सोमवारे प्रभुजी पधारयारे। मथुरा नगरीमां आयारे। छप्पन क्रोड़ जादव मली आया॥ "केजो श्री नेमजी केम ना आयारे ॥ १ ॥ मंगलवारेथी तोरण आयारे। पशु नाद सुणी मन थायारे ॥ पूछे शाश्वती केम मंगाव्या ॥ के० ॥ २ ॥ बुधवारे दया मन आणीरे। पशु छोड़ावे क्षमा गुण जाणीरे। राणी राजूल रोष भराणी ॥ के० ॥ ३ ॥ गुरुवारथी गिरनारे चढियारे। सहस्स पूर्व सहु परिवरियारे। ठामो ठामथी पगला वरिया ॥ के० ॥ ४ ॥ शुक्रवारे सहसा वन विराजेरे। प्रभु त्रिगड़ागड़मा राजेरे ॥ मेग वरणी देशापुर गाजे ॥ के० ॥ ५ ॥ शनीवारेथी संजम धारीरे। लागे केवल ज्ञाननी ताडीर॥ सहसावनमा मेल्या नर नारी॥ के० ॥ ६॥ अदीत्ते आणंदकारीरे। प्रभु गायोथी सुखकारीरे॥ श्रावक ने हितकारी ॥ के० ॥ ७ ॥ राजूल ऊभी

विनवेरे, संजम लेउं तुम पासेरे । तुम गुरू थवाथी हुवे हुल्लासे ॥ के० ॥ ८ ॥ साधु अठारा हजार विराजेर ॥ साध्वीया चालीस हजाररे । चौदे पूर्व धर सो चार ॥ के० ॥ ९ ॥ पन्नरसो अवधी ज्ञानना धरियारे । पन्नरसो वेक्रिय लब्धीना धरियारे । केवल ज्ञान पंद्रसो जाण ॥ के० ॥ १० ॥ एक सहस्स मनः पर्यव ज्ञानीरे । वाद् करवाना आठसो जाणीरे । एक लाख उगणोत्तर सहस्स श्रावक ॥ के० ॥ ११ ॥ त्रण लाख चालीस हजार श्रावीकारे । पांचसो दो छत्रीस मुनि साथेरे । एक सहस्त्र आ-युष्य थयो जाणी ॥ के० ॥ १२ ॥ आषाढ शुक्ल अष्टमी दिनेरे, चित्रा नक्षत्र सायंकालेरे ॥ प्रभु मोक्ष थया हुल्लासे ॥ के० ॥ १३ ॥ संवत् उगणीसो सित्तर शालेरे । मिगसर विदी छठ कहीसरे । बुधवार ने निशादिश ॥ के० ॥ १४ ॥ मोहन मुनि-जीना पसायरे । शिष्य यश सूरिजी पूरे आशारे । गायो राजगृह मांय हुल्लासे ॥ के० ॥ १५ ॥

॥ स्तवन ॥

गुमानी घर वरसत क्यों नहीं पानी । वरसत क्यों नहीं पानी हो ॥ गु० ॥ जीव जंत सब तरसन लागा, ए धरती सोही कुमलाणी ॥ हो० गु० ॥ १ ॥ सूक गया सरोवर, ऊड गया हंसाए, बेलड़ी आई कमलाणी ॥ हो गु० ॥ २ ॥ हरी हरी बूँद घटा जुं कहाइए, सरोवर नीर गलोला ॥ हो गु० ॥ ३ ॥ दादुर मोर पपैया बोलेए, कोयल मधुरीस वाणी हो ॥ गु० ॥ ४ ॥ सुर कहे प्रभु तु मारे भजनसेए, इण भवथीए मुझ तारो । परभवथी मोय तारो ॥ हो गु० ॥ ५ ॥

॥ अथ स्तवन दादाजीका ॥

अरे लाला श्रीजिनदत्त सूरिश्वरू, दादा प्रह ऊगमते सूररे लाला, भाव धरी पूजो सदा, कुंकुम घस मेली कपूररे लाला ॥ श्री० ॥ १ ॥ जीती चौसठ जोगणी, वश कीया बावन वीररे लाला ॥

मंत्र बले कर साधीया, जिणपंच नदी पंच पीररे लाला ॥ श्री० ॥ २॥ प्रतिबोध्या श्रावक श्राविका, मील लाख सवा सहदेशरे लाला। जैन धर्म दीपा-वियो, खरतरगच्छ कमल दीनेश ॥ श्री० ॥ ३ ॥ हिंसा टाली जीवनी, जे सिंध सवासो देशरे लाला। दानव मानव देवता, माने सहु आण नरेशरे लाला । श्री० ॥ ४ ॥ जुग प्रधान पद जेहने, देवे परतिख हुइ दीधरे लाला । पुन्य पुरूष जग पर-गड़ो, जिण करणी उत्तम कीधरे लाला ॥ श्री० ॥ ५॥ कामित दायक कलियुग, सांचो सुर तरू अवता-ररे लाला । समरण श्याम घटा करी, महियल वरसे जलधाररे लाला ॥ श्री० ॥ ६ ॥ आज विषम पंचम आए, जेहना मोटा अबदातरे लाला । नामे न पडे वीजली, न हुए छल छिद्र तिल मात्ररे लाला ॥ श्री० ॥ ७ ॥ संवत बार इग्यारमे, आषाढ शुक्लपक्ष जाणरे लाला । इग्यारस सदगुरू तणी, अजमेर नगर निरवाणरे लाला ॥ श्री० ॥ ८ ॥

महर करी मुझ ऊपरे, गुरू पूर निजर मिहालरे लाला। राज हरख कर जोडने, गुरू वंदे चरण त्रिकालरे लाला ॥ श्री० ॥ ९ ॥

आयो आयोरी समरता दादोजी आयो ॥ संकट देख सेवक कुं सद्गुरू देरावरत्ये थायोरी ॥ समरता० ॥ १ ॥ वर्षे मेहने रात अंधेरी, वाउफेण सवलो वायो । पंच नदी हमे बैठे बेडी दरिये चित्त डरायो ॥ समरता० ॥ २ ॥ उच्च भणी पहुं-चावण आयो, खरतर संघ सवायो । समयसुन्दर कहे कुशल कुशल गुरू, परमानंद सुख पायोरी ॥ समरता० ॥ ३ ॥

॥ स्तवन १ लुं ॥

॥ राग प्रभाती ॥ उठोने मोरा आतमराम—ए देशी ॥

सिद्धगिरि ध्यावो विमल जावो, कंचनगिरि वेलां वधावोरे ॥ सिद्ध० ॥ ए आँकणी ॥ इण गिर वरियारी महिमा मोटी, कहेतां न लागे खोटीरे।

रायण रूंख समोसरया स्वामी, पूर्व नवाणुं मोटीरे ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ पांच कोडीसुं पुंडरीक सिद्धा, बे बे कोडिशुं नमि विनमि जाणोरे । दश कोडि परिवारे द्राविड़, वारि खिल्ल वखाणोरे ॥ सिद्ध० ॥ २ ॥ राम भरत पांडव नारद ऋषिराया, गुण प्रभुका इहां गायारे । कर्म खपावी केवल पाया, हुवा शिवरमणी रायारे ॥ सिद्ध० ॥ ३ ॥ थावच्चा पुत्र ने शुक शैलक मुनि, देवकीनन्दन सिद्धारे । शांब प्रद्युम्न कुमार इहा सिद्धा, कारज निजनिज कीधारे ॥ सिद्ध० ॥ ४ ॥ गिरिवरे जिनजीकी सेवा हेवा, नितनित मुझने होजोरे । जिनज्ञाने जिन-ध्याने रहिने, 'जिनचन्द्र' पद लेजोरे ॥सिद्ध०॥५॥

॥ स्तवन २ जुं ॥

सिद्धाचल मंडण स्वामीरे—ए देशी।

चौमासु सिद्धाचल रहियेरे, मंदिर तलाटीये नित जइयेरे । हांरे जिन दर्शनना द्वेषि न थइये-

जातीडा जातीड़ा जिनदर्शन सुख कंदोरे । हारे एतो टाले भवनो फंदो–जातीडा जिनदर्शन मत निंदोरे ॥ १ ॥ अमे जयणाथी इहां जासुंरे, प्रभु आणाने दिल मांहे धरसुंरे । हांरे तेथी आराधक अमे तरसुं ॥ जातीडा सिद्धगिरि चौमासु करियरे ॥ २ ॥ अमे जिनदर्शनना रंगीर, ढूढकना नहीं संगीरे । हांरे किम थइये जिनदर्शनना भंगी ॥ जा० ॥ ३ ॥ वषाले गिरि मुनि जावेरे । कोश अढी श्रीवीर फरमावेरे । हांरे कल्पसूत्र विरूद्ध किम कहावे ॥ जातीड़ा० ॥ ४ ॥ सिद्धगिरि जिन दर्शन सारूंरे, एतो लागे मुजमन प्यारूंरे । हांरे जिनदर्शन 'जिनचन्द्र' तारूं ॥ जा० ॥ ५ ॥

॥ स्तवन ३ जुं ॥

सिद्धाचल दर्शन करवाने, मनडुं उमायुं मारुं भविजन–
भवजल तरवाने–ए देशी ॥

चौमासु सिद्धाचल करसुंजी, तलाटी मंदिर दर्शन करीने पावन थांसुजी ॥ ए आकणी ॥ आदि

जिणंद इहा आवीयारे, पूर्व नवाणु वार । अजित शान्ति चौमासु कीधो, गणधर मुनि परिवार ॥ सिद्धा० ॥ १ ॥ दर्शन करवा जे जन जावे, तेने निंदे निषेधे। शंका थइ समाधान स्तवनथी, करसुं आतम बोधे ॥ सिद्धा० ॥ २ ॥ आणा माने जिन तणारे, ते संघ आण प्रमाणा । जिन दर्शन निषेधनुंरे, किम झूठ डफाण ॥ सिद्धा० ॥ ३ ॥ वर्षाले अढी कोश ऊंचारे, गिरि चढे अणगार । कल्पसूत्रे आणा वीरनीरे, किम नहीं मानुं विचार ॥ सिद्धा० ॥ ४ ॥ टूंके तिम तलाटीयेरे, पगले मंदिरे न जवाय। शास्त्रे तेवो निषेध नहींरे, आगे जाता ने जवाय॥ सिद्धा० ॥ ५ ॥ तलाटी मंदिर दर्शनेरे, जे जावे भव्य जीव। तेने किम निषेधियेरे, ढूढक परे करी खीव ॥ सिद्धा० ॥ ६ ॥ सिद्धगिरि मंदिर दर्शनेरे, जो वर्जु नरनार । दुर्लभ होय जीवड़ारे, भमे घणो संसार ॥ सिद्धा० ॥ ७ ॥ पगतिया पनर डूंगर चढीरे, पगला देखुं नहीं दोष । चढी आगे पग-

तियां। जिन देखुंरे किम मानुं कहो दोष ॥ सिद्धा० ॥ ८ ॥ जो कहुं जीव विराधनारे, जयणाथी नहीं होय। तो तलाटी पगले मंदिररे। जयणाए चालो सहु कोय ॥ सिद्धा० ॥ ९ ॥ अंधेरेने धूँवरेरे, वर्षते फूस फूसे जाय। जयणा विना इम जावतारे, विराधकते थाय ॥ सिद्धा० ॥ १० ॥ जयणाए इहां चालवुंरे, जयणाए बेसंत। पाप कर्म बांधे नहींरे, इम भाखे भगवंत ॥ सिद्धा० ॥ ११ ॥ एकेकु डगलु भरेरे, गिरि सन्मुख उजमाल। कोडिरे भव सहसना करथारे, पाप खपे तत्काल ॥ सिद्धा० ॥ १२ ॥ पगतियां पनर डूंगर चढीरे, आगे ऊपर चढे जेह। तेने विराधक बोलतारे, सूत्र विरूद्ध होय तेह ॥ सिद्धा० ॥ १३ ॥ तलाटी पगले दर्शनेरे, नहीं विराधक तेह। तलाटी मंदिर दर्शनेरे, नहीं विराधक एह ॥ सिद्धा० ॥ १४ ॥ तलाटी पगले दर्शनेरे, होय आराधक जेह। तलाटी मंदिर दर्शनेरं होय आराधक तेह ॥ सिद्धा० ॥ १५ ॥ जिन दर्शन

पूजन थकीरे, पामे परमानंद । भव भव दर्शन जिन तणुंरे, मुझने होजो जिनचंद ॥ सिद्धा० ॥ १६ ॥

पुंडरीक गणधर चैत्यवन्दन

पुंडरिक गणधर ने नमुं, भावधरी उछरंग। प्रथम जिणंद गणधर विषे, ए सहुमें अति चंग ॥ १ ॥ आदि जिणंद आदेशथी, आव्या विमल गिरिंद । आदरी अणसण अति भलु, पंचकोड़ी मुनिचंद ॥ २ ॥ सिद्धध्यान ध्याता थकाए, करी कर्मनो नाश ॥ चैत्री पूनम शिवसुख लह्युं, द्यो जिनचंद्र ते वास ॥ ३ ॥

श्री पुंडरीक गणधर–स्तवन

नमो नमो पुंडरीक गणधररे लो । आदि जिणंद गणधार, मन मोह्युंरे ।आदि जिणंद उपदेशथीरे लो । सिद्धगिरि मुक्ति धार ॥ मन मोह्युंरे

॥ नमो० ॥ १ ॥ सिद्धाचल अणसण करीरे लो, धरता सिद्धनु ध्यान ॥ मन मोह्युरे। पंचकोड़ी परिवारथीरे लो। पाम्या केवल ज्ञान । मन० ॥ नमो० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम मुग्ते गयारे लो, सादी अनंत कर्यो वास ॥ मन० ॥ भव भव सरणो तेहनारे लो। ए मांगु जिनचन्द्र आस ॥ मन० ॥ नमो० ॥ ३ ॥

थुइ १

कल्याण ते श्रेय रूपे, मानियाए, माता बे कूंखे महावीर तो सर्व जिन जननी कूंखेए, आव्या कल्याण तिम धारतो। भाखी जिन पडिमा पूजाए, ऋतुवंती न पूजे देवतो। पूजती ऋतुवंती जे थायए, पूजे न ते प्रभाविक देवतो ॥ १ ॥

(नोट–ए थुई ४ वेला पडिक्कमणामां पण बोलाय)

थुई ४

कल्याण गर्भ हि वीर हरण ते धारण, त्रिशला कूंखे अवतरीया (संक्रमिया) जी । कल्याण श्रेय

फल कल्याण सुपने, बे माता इन्द्रादि सहु मान्या जी ॥ नीच उच्च बे गोत्रे अच्छेरूँ कल्याण जे तें किम कहुं अकल्याण जी। कल्याण जे उच्च गोत्र ते नीच विपाक निंद्य, कही किम थापुं, अकल्याण जी ॥ १॥ सर्व जिन माता कूंखे, जब आव्या, 'क मन्ने कल्लाणे' फलमान्या जी। कल्याण ते श्रेय सुख समृद्धि पुत्र लाभ, सुपने पाठके दिखलायाजी ॥ राणी राजा इन्द्रे सर्वे तिम मान्या, श्रुत केवली भद्रबाहुए जी। कल्पसूत्र पंचाशके जिन गर्भ धारण, कल्याण श्रेय बतावेजी ॥ २ ॥ श्री जिन पडिमा पूजा भारवी, ऋतुवंती नहीं पूजे नारजी। धन हाणी काया रोग इह भवे होवे, शासन मलिनता कारजी ॥ जिन अंग पूजती, ऋतुवंती थाय जे, करे देव प्रभाव निसारजी। ते स्त्रि न पूजे, देवाधिष्ठ मूल बिंब, जे शासन उन्नति कारजी ॥ ३ ॥ वीर शासन सिद्धायिका देवी, सुरगण करे सदा सारजी। वीर-कल्याण श्रेय गुण गण गातां, श्रेय फल

कल्याण अपारजी ॥ नीच निंद्य अकल्याणक भूत मानी, किम बांधु कर्मनो भारजी । जिन आशातना अवगुण बोले, श्रीजिन चन्द्रशासन दूरजी ॥४॥

सज्झाय

नगरी द्वारिकामा नेमि जिनेश्वर, विचरतां प्रभु आविया। कृष्ण नरेश्वर वधाइ सुणीने, जीत नगारा बजराव्या प्रभुजी नहीं जाउं नर्कनी घर नहीं नहीं जाउं नर्कनी घेर ॥ १ ॥ सहस्त्र अट्ठारे साधुजी विदीसुं, वाद्यां अधिक हरखे। पछे नेमि जिनेश्वर केरा ऊभा मुखड़ा निरखे ॥ प्रभु० ॥२॥ नेमि कहेरे तुमे चार निवारी, तीन तणा दुःख सह्या कृष्ण कहेरे हुं फरी फरी वंदु, हियडे हर्ष घणेरो ॥प्रभु० ॥ ३ ॥ नेमि कहे तुम टाल्या न टरसे, मानों ते एक वात ॥ कृष्ण कहे मारे बाल ब्रह्मचारी, नेमि जिनेश्वर भ्राता ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ पेटे आवीयो ते

भोणीयो भेटे पुत्र कुपुत्रज जायो । भलो भूंडो पण जाद्वकुळनो, तुम बांधव केवायो ॥ प्रभु० ॥ ॥५॥ मोहटा राजानी चाकरी करतां, रांक सेवक बहु हरसे । सुर तरु सरिखो अपजज थासे तो लरी केम फरसे ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ छप्पन क्रोड़रे जाद्वनो साहेबो कृष्णज नरकज जासे । नेमि जिनेश्वर केरोरे बांधव जब मोही अपजस थासे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ समकित शुद्धनी परिक्षा करीने, बोलिया केवलनाणी । नेम जिणेसर दियोरे दिलासो, खरो रुप यो जाणी ॥ ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥ नेमि कहेरे तुम चिंता न करसो, तुम पद्वी हम सरिखी । आवती चौवीशी होसो तीर्थंकर, हरि पोते मन हरखी ॥ प्रभु० ॥ ९ ॥ जाद्वकुल उजलायोरे नेमजी । समुद्रविजय कुल दीवो । इन्द्र कहेरे सेवा देवीनो नंदन, क्रोड़ दीवाली जीवोरे ॥ प्रभु० ॥ १० ॥

॥ सज्झाय ॥

आयो एकेलो इकोइ जासी, क्यों करे इतनी उदासीरे । जीव कुटुम्ब मिल्यो तरू खग निवासी। अवधी परभाउदासीरे ॥ जी० ॥ आ० ॥ १ ॥ पुद्गल ऊपर पंच लोभायो, मिल मिल विछड़ जावेरे ॥ जी०॥ सडण पडणरो धर्म कहावे, निश्चल कर्म ठहरावेरे ॥ जी०॥ अ० ॥ २ ॥ आछा संजोग मिल्या सुख माने, हुआ विजोग दुःख आणेरे ॥ जी० ॥ सुख दुःख बेहु झूठारे जाणु, जे निजरूप पीछाणेरे ॥ जी० ॥ आ० ॥ ३ ॥ भोग संजोगमें लुब्धोरे भाई, आही विजोग रीसाईरे ॥ जी० ॥ तीर्थपति श्रीमुख फरमावे, वामे शंका न कांइरे ॥ जी० ॥ आ० ॥ ४ ॥ एकत्व सूधी भावना भाई, नमि राज ऋषि भाईरे ॥ जी० ॥ शक्रेन्द्र शुद्धडी कराई, सिद्धपुरी तिण वाईरे ॥ जी० ॥ आ०॥ ५ ॥ मोह सुभट धीरणगड़ ढावे, ज्ञान बलिष्ठ चुणा-

वेरे ॥ जी० ॥ आरतिकुलटारो संग । जो छोड़ावे समता रति मन लावेरे ॥ जी० ॥ आ० ॥ ६ ॥ शाता अशाता सम परिणामे, भोगवे ते धन पुरसारे ॥ जी० ॥ समयसुंदर करजोड़ी विनवे, ज्येष्ठ सदागुण गावेरे ॥ जी० ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ सज्झाय ॥

तट यमुनानोरे अति रलियामणोरे ॥ ए देशी ॥

नान्हो न मानेरे, कांई कह्यु माहरुरे । सौ की हसीरे जोय ॥ नणद बेहुरे घणु अटारडीरे ॥ जेठ झूटो मुझ होय ॥ १ ॥ किम जालवीयेरे कुटुम्ब अटारडूरे । करे मुझस्युं नित रोस ॥ टेक ॥ एकण गामीरे पीहर सासरुरे, बोले मलि मलि दोस ॥ कि० ॥ २ ॥ जेठाणी मुझ परवश थई फिरेरे । देवरने नहीं लाज । देराणी छेरे अति उछाछलीरे, मांडे विरओ काज ॥ कि० ॥ ३ ॥ सूसरो सुहालोरे बोली नवी सकेरे, सासुड़ीनो नहीं विश्वास ॥

पियर पीता छेरे मुझ रोसीउरे, भावड़ो देखाड़ त्रास ॥ कि० ॥ ४ ॥ फूओ बेठोरे बें बें बहु करेरे, फइडी लगावे मुझ राव ॥ पर घर भंजक मामो माहरोरे, मामीनो खोटो स्वभाव ॥ कि० ॥ ५ ॥ मासी लूटेरे मंदिरमें पेशीनेरे, मासो देखत लेह जाय । कामे करावेरे, जोरे भाइलोरे, भोजाइ वड़वा धाय ॥ कि० ॥ ६ ॥ फंदे पाडे पितरियो वलीरे, पितराणी कमजात ॥ दादो म्हारोरे धूरथी लोभी-योरे, दादी करे बहु घात ॥ कि० ॥ ७ ॥ बेटड़ी तपावेरे मुझने अति घणुंरे, जमाइ करेरे संताप ॥ बेटो रहेरे मुझसुं रूसणेरे, बहुअर देरे सराप ॥ कि० ॥ ८ ॥ निर्लज म्हारोरे वडाउ सहु कहेरे, वड़ीआइ विकराल । कोइ नहीं भलु इण कुटुंबड़ेरे, बोले आल पंपाल ॥ कि० ॥ ९ ॥ एणे गामेरे दो चोर नित फरेरे, तिणे सुख नहीं लव लेस । एहवे मूकीरे जे अलगा रहेरे, ते पुन्यवंत विशेष ॥ कि० ॥ १० ॥ एह अरथ कह्यो अगोचररे, सह गुरुने

आधार । करजोड़ी मुनि दयासील कहेरे, जोजो पंडित विचार ॥ फि० ॥ ११ ॥

श्री नेमि जिणंदकों अध्यात्म लहरयो

लहरयो भीजे म्हारो रंग चुवे ए देशी.

लहरयो भींजे मारो रंग चुवे, कांइ भींजे२ रंग सुंथारो ए सुज्ञानी जीवड़ा । थें तो माणो माणो मुक्तिरो मोजांररे ॥ सुज्ञा० जी० ल० ॥ म्हारो लागो२ जिनजी सुं ध्यान रे । सु० ल० ॥ १ ॥ उंच नीच दुःख में सह्या, काइं उं० ॥ कांइ कर्मों केरा वसए ॥ सु० ल० ॥ २ ॥ लाख चौराशी यौनिमें । कांइ ला० सह्या दुःख अनंत ए । सु० ल० ॥ ३ ॥ आदि निगोदे हुं रुल्यो, कांइ आदि० । कांई कहेता न आवे अंत ए । सु० ल० ॥ ४ ॥ नरकां का दुःख में सह्या, कांइ छेदन भेदन ताड़नाए, ॥ सु० ल० ॥५॥ तिर्यंच भवमाहीं हुं भम्यो, ति० कांइ दुःख सह्या

भरपूर ए। सु०। ल०॥ ६ ॥ मनुष्य गति में ऊपज्यो कांइ० भील भोई चंडालए।सु०। ल०॥ ७ ॥ देव-गति भवमें पामीयो, कांइ० व्यंतर भूत पीशाचए। । सु०। ल०॥ ८ ॥ पाप तणा फल पामीयो, कांइ० अपणी करणी रो सारए। सु०। ल०॥ ॥ अवि-नाशीपद में लह्यो, कांइ देवगुरु के प्रसादए। सु० ल० ॥ १० ॥ म्हारो लागो२ प्रभुजी सु ध्यान ए। सु० ल० ॥ ११ ॥ चेतन का बजारमें, कांइ० आयो२ लेहरयो विकाउं ए। सु० ल० ॥ १२ ॥ यो लेहरयो मो लवे, कांइ कुण देसी दामए। सु०। ल० ॥१३॥ दर्शन लेहरयो मोलवे, कांइ धर्मशील मोलए। स० । ल० ॥ १४ ॥ लेहरयो मोंघा मोलको, कांइ० जीकी छे नवी नवी भांतरोए। सु०। ल० ॥ १५ ॥ शील संजम सु लेहरयो, कांइ करी लीधो मोलए। सु०। ल० ॥ १६ ॥ करुणा केरी भातड़ी, कांइ दया धर्म री लेहरांए। सु०। ल० ॥ १७ ॥ पंच सुमतिको रंग वसीयो कांई क्षमा लेहरियो नाथए। सु० ल० ॥१८॥

धर्म जिनेश्वरको लहरियो, कांइ जगमें मोलवे ए मोटी वात ए। सु० । ल० ॥ १९ ॥ धन धन थाहरो लेहरियो, कांइ सब मिल करेरे वखाण ए ॥ सु० ॥ ल० ॥ २० ॥ यो कुण ले हरियो पहेरसी, कांइ यो कुण निरखण हार ए । सु० ल० ॥ २१ ॥ राजूल लहेर्‌यो पहेरसी, कांइ नेमजी निरखणहार ॥ सु० ल० २२ ॥ ज्ञान गंभीर म्हारी बादली, कांइ लहेर्‌यो अन भींज्यो ए ॥ सु० ल० ॥२३॥ गिरनार जाकी वाटड़ी कांइ० उड़े२ मार्ग ज़ीणी २ खेह ए ॥ सु० ल० ॥ २४ ॥ फागुण मासरी ऋतु भली, कांइ नेमिश्वर खेले फाग ए ॥ सु० ल० ॥ २५ ॥ आठ कर्मकी धूलड़ी कांइ० आतमसु खेले फाग ए॥ सु० ल० ॥ २६ ॥ ध्यान क्षमा पाणी कियो, कांइ० तनकी करी गुलाल ए। सु० ल० ॥ २७ ॥ तप जप शील पाली करी, कांइ० नेमिसर मुक्ति सिधाया ए । सु० ल० ॥२८॥ सहसावनका बागमें कांइ० अति लीनो फूलमाल

ए। सु० ल० ॥ २९ ॥ भाभीको देवरीयो लाड़लो, कांइ० लावे लावे फूल अपारए। सु० ल० ॥३०॥ ज्ञान गुमानी म्हारो देवरियो, थें तो फूल कठासुं लायोए। सु० ल० ॥ ३१ ॥ शील सुहागण म्हारी भाभीजी, कांइ म्हेंतो फूल वागाथी लायाए। सु० ल० ॥ ३२ ॥ ज्ञान गुमानी म्हारो देवरियो, थें तो फूल किणहीने देसोए। सु० ल० ॥ ३३ ॥ सुमति सोहागण म्हारी भावजी, कांइ में तो फूल दादाजीने देसाए। सु० ल० ॥ ३४ ॥ नरनारी ए लहेरयो गावसी, कांइ स्वर्गा सुख अति पावसीए सु० ल० ॥ ३५ ॥ भवि जीव ए लहिरयो गावसी, कांइ भव भव उतरे पारए। सु० ल० ॥ ३६ ॥ अती रंग लहेरयो भींजीयो, कांइ गावे सुने सुख पावेए। सु० ल० ॥ ३७ ॥ लहेरयो सरस गाइयो, कांइ विजय हुवो परतापए। सु० ल० ॥ ३८ ॥ संवत अठारे तेपने कांइ वैशाख सुदि एकम रवीए। सु० ल० ॥ ३९ ॥ कल्याण क्षमा विनवे, कांइ उदयपुर रही चौमासए। सु० ल० ॥ ४० ॥

॥ रात्री भोजननी सज्झाय ॥

रात्री भोजनमें दूषण घणा, कूडो कयो न जाय । तिण अणसारू इम कह्यो, सांभलजो चित्त लाय ॥ १ ॥ ढाल पेली ॥ छठो व्रत रयणी तणो ए भोजननो परिहार करे कोई मानवीये । हो जावे खेवा पारके । व्रत आराधीये ए ॥ २ ॥ साज पड्यां भोजन करे ए । दिन आथमते सुर ॥ केवलीयां ईम कयोए ॥ साधपणेसु दूर के ॥ व्रत० ॥ ३ ॥ कागादिक सहु पंखीयाए । रात रान चूंगवा नहीं जाय के ॥ आंधो भोजन रातरो ए । भला माणस किम खाय ॥ व्रत० ॥ ४ ॥ रयणी भोजन करता थका ए । सु माछर पड जाय । कीडी ने कुंथवो ए । रातरी खबर न चार के ॥ व्रत० ॥ ५ ॥ रयणी भोजन करता थकाए, मकड़ीरो रायतो खाय के ॥ गलर्त कोढ नीकलेए ॥ गलत थकी मर जाय के ॥ व्रत० ॥ ६ ॥ रयणी भोजन करता थका ए, दया नहीं दिल मांय ॥ नाना कोइ जीवड़ाए, मुखसे काढ्या नहीं जाय के ॥ व्रत० ॥ ७ ॥ रयणी भोजन करता थका ए, मन भावे सो खाय के व्रत एको

नहीं ए । मरने दुरगति जाय के ॥ व्रत० ॥ ८ ॥ आठ पहोर दिन रातरो ए, नहीं वीरत सुजोग । सदाइ चरतो रहे ए, जाणे जंगलरो ढोर के ॥ व्रत० ॥ ९ ॥ जैनधर्म मांहे एम कह्यो ए, जाणीये नव वाड ॥ कठण करवो वलीए, दुक्कर दुक्कर थाय के ॥ व्रत० ॥ १० ॥ उमररा सुख शाश्वता ए ॥ न करे अधिक स्नेह । ऊनाले जल विनाए, त्याग दिना छे देह के ॥ व्रत० ॥ ११ ॥ भूख तृषारो पीलीयो ए, जीव निकल्यो जाय के पाणी रेणी तणो ए, न घाल्यो मुख रे मांय के० ॥ व्रत० ॥ ॥ १२ ॥ चोथो व्रत भांग्या पछी कारी न लागे काय ॥ कदा सामा मिले ए, नहीं काया नहीं माय के ॥ व्रत० ॥ १३ ॥ पांच महाव्रत मोटका ए, मुक्ति तणा दातार ॥ पाले सहु भावसे ए, हो जावे खेवा पार के ॥ व्रत० ॥ १४ ॥ होया होया होसी नही ए, तिण सरिखो जाणो मान ॥ केवलीयो इम कयो ए ऊंडो घणो अथाग ॥ व्रत० ॥ ॥ १५ ॥ पडिया पडिया सहु पड गया ए, होगया

चकनाचूर ॥ दयाव्रती ऊवरे ए, सामा मिल गया सुर के ॥ व्रत० ॥ १६ ॥ तिरीया तिरीया सहु तिर गया ए, हुवा धरमरा दोट ॥ वीजेमलजी इम कहे ए, इणमे न चाले खोटके ॥ व्रत० ॥१७॥

॥ जेसलमेर मंडन श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन ॥

पार्श्व चिंतामणि भविजन ध्येयं, मन ईप्सित दातारं रे । पत्तन लोद्रव कृतशुभस्थितं, मरु भू नभस्तल चंद्रं रे ॥ पार्श्व० ॥ १ ॥ रत्न चिंतामणि सुरतरू तुल्यं, चिंताकदली कृपाणं रे ॥ पार्श्व० ॥ २॥ कृतपूर्व पुण्यैर्मया लब्धं, वामा सुत मुदारं रे ॥ पार्श्व० ॥ ३ ॥ चंचच्छ्याम वर्ण प्रभु मुर्त्ति, पार्श्व सेवित शुभ पार्श्व रे ॥ पार्श्व० ॥ ४ ॥ भव्यजन भवजलनिधि तरणे, चारु संस्थित पोतं रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ राका पूर्णेंदु मुख कमलं, शान्त्यादिकं गुणोपेतं रे ॥ पार्श्व० ॥ ६ ॥ भक्त्या वंदेऽहं जिनपार्श्वं, शिवरमणी दातारं रे ॥ पार्श्व० ॥ ७ ॥ सकल गुण गरिष्ठ स्तीर्थकृत् ह्याश्वसेनिः । अमर नर निकायः

प्राण मध्यस्य पादं ॥ भुवि भविकज बोधे, यः सदा सूर्य तुल्यः । स भवतु जिन चन्द्रो मुक्ति सौभाग्य दाताः ॥ ८ ॥

॥ नाकोड़ा मंडन श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

प्रभु पार्श्व देख हुलसाया, मैं नगर नाकोड़े आया । तुम नाम अनेक प्रभु धारे, मक्सी गोड़ी पास प्रभु प्यारेरे मैं नगर० ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ हस्ति देवगति पद पाया, कलिकुंड तीर्थ धपवाया । जगन्नाथ जीरावली राया, शंखेश्वर नाम धरायारे, मैं नगर० ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ जरासंघकी जरा निवारी, हुए कृष्ण जयजयकारी । थंभणपुर स्वामी नामी, भविजन मनके विसरामीरे, मैं नगर० ॥ प्रभु० ॥ ॥ ३ ॥ योगी नागार्जुनने ध्याया, वो कंचनसिद्धि पाया । श्रीमद् अभयदेवसूरिराया, प्रभु स्तवने कुष्ट मिटायारे, मैं नगर० ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ अव इतनी अरजी मेरी, प्रभु ! लीजिये आप सवेरी । जिन केशर शरणे तोरे, मिटादो भवके फेरे, मैं नगर० ॥ प्रभु पार्श्व० ॥ ५ ॥

॥ श्री सीमंधर जिन स्तुति ॥

श्री सीमंधर आदि जिनना, जाणो ए सर्व कल्याणजी। च्यवने कल्याण अवतरणे कल्याण, गर्भधारण कल्याणजी ॥ जन्म कल्याण दीक्षाए कल्याण, केवलज्ञाने लल्याणजी। मोक्षे कल्याण जे कल्याण फल जीवने, न होवे ते अकल्याणजी॥१॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तुति ॥

श्रीसिद्धाचले आदिजिन आव्या, पूर्वनवाणु वारजी। अजितशांति चौमासु कीधुं, गणधरमुनि परिवारजी ॥ दर्शन पूजन भविजन कीधुं, देशना अमृत पीधुजी। चौमासे तलाटी देरे जिनदर्शन पूजने नर स्त्री केम निषेधुजी ॥ १ ॥

॥ २ सिद्धाचल स्तुति ॥

आव्या पूर्वनवाणु आदिजिन, चौमासी अजित शांति कीधीजी। तीर्थ आशातना प्रभावना नष्टकारी, ऋतुवंती पूजा निषेधीजी ॥ सिद्ध गिरि मंदिर दर्शन पूजन, चौमासे सहुने केम

निषेधुजी । अढी कोश ऊंचा गिरि जावानुं, कल्प सूत्रे वीरे कीधुंजी ॥ १ ॥

श्रीजिन प्रतिमा हो जिन सारखी, कहिए दीठा आणंद । समकित विगड़े हो शंका कीजतां, जिम अमृत विषवृन्द ॥ श्री० ॥ १ ॥ आज नहीं हो कोइ तीर्थंकर इहां, नहीं कोइ अति शयवंत। श्रीजिन प्रतिमानो एक आधार छे, आपे मुक्ति एकंत ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूत्र सिद्धान्त हो तर्क व्याकरण भण्या, पंडित पिण कहे लोक । श्रीजिन प्रतिमाने जे माने नहीं, तेनो सघलो फोक ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जिनवर प्रतिमाने आगे नमोत्थुणं कहे, पूजा सतर प्रकार । फल पिण छोल्या हो हित सुख मोक्षना, द्रौपदीने अधिकार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ रायपसेणी हो ज्ञाता भगवती, जीवाभिगम मांझ। ए सूत्र माने हो प्रतिमाने हो प्रतिमा माने नहीं, माहरी माने वाझ ॥ श्री० ॥ ५ ॥ साधुने बोल्या हो भावस्तव भला, श्रावक ने द्रव्य भाव। ए बेहु करणी हो करता निस्तरिया, जिन प्रतिमा पर-

भाव ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पारसनाथ हो तुझ प्रसादथी, सर्द्दहणा मुझ एह । भवभव देजो हो समयसुन्दर कहे, जिनप्रतिमासु नेह ॥ श्री० ॥ ७ ॥

त्रिशलानन्दनकी खुली दुकानजी तुम माल खरीदो ॥ सूत्ररूप भरी बहु पेटी यासरे, मुनिवर बड़ा वैपारी । तरण तारणका माल दिखावे, करे अपना दिल राजीजी ॥ तुम० ॥ १ ॥ जिनवाणीको गज हे सांचो, जरा फरक नहीं जाण । नाप नाप ने दे सत्यगुरूजी, नहीं करे खेंचाताणजी ॥ तुम० ॥ २ ॥ जीवदयाकी मलमल भारी सुह मन मिसरू लीजे । उबल झीण समता तणो सरे, जो चाहिये सो लीजोर ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तपस्या को बंदागर भारी । साडिया सन्तोष । एसा काम करो जिणा सुं चेतन पावे मोक्षजी ॥ तुम० ॥ ४ ॥ माल बीके थोड़ो जिससे, सस्तो पुरीयो न जाय । आपेगा उत्तम प्राणी, माल हमारा ले जायजी ॥ तुम० ॥ ५ ॥ माल वीके तो रहना होसी । सुणजो भवि-

यण प्राणी । भरिया खजाना किसी विध खूट, सद्गुरू दीना हाथजी ॥ तुम० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसो बत्तीसे, शाल बत्तीसे, बम्बाइ चौमासे। मुनि मोहन उपदेश सुणायो, मोक्ष जाणे की आशजी ॥ तुम० ॥ ७ ॥

॥ स्तवन ॥

प्रभु वीर तणो उपदेश के, दिलमें धारणारे। भवियण जन्म मरण मिट जाय, फेर नहीं आवणारे ॥ टेर ॥ कका कल्पसूत्र सुण सारी, खखा खेवा पार लगारी । गगा ज्ञानसे करो विचारी, घघा घट वीच प्रभु को राख फेर नहीं आवणारे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ चचा चउदह सुपना देखो, छछो छिन छिनरो लेवो लेखो। जजा जन्म प्रभु को देखो । झझा झूठ कबु नहीं बोल के फेर नहीं आवणारे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ टटा टेर प्रभुसे म्हारी, ठठा ठौर मिले सुखकारी । डडा डर राखो भय भारी, ढढा ढील कबहु नहीं जाण फेर नहीं आवणारे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ तत्ता तन मन धन थिर

नाहीं, थथा थिर जगमें कोइ नाहीं । ददा दान देवो जग मांही, धधा धर्मसे फरो तुम जीत, फेर नहीं आवणारे ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ पपा पुस्तक जी घर लावो, फफा फिर तुम रात जगाओ । बबा बांधो पुन्यसे लाहो, भभा भवसागर तिर जाय फेर नहीं आवणारे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ यया यह इच्छा बहु भारी, ररा राखो धर्म विचारी । लला लाभ लेवो सुखकारी, ववा विघ्न टले सुख होय फेर नहीं आवणारे ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ ससा संवत सित्योतर जाणो, दुतिक श्रावण मास वखाणो । वद तेरस वार वृहस्पति जाणो, ससा सेवक छगनको तार फेर नहीं आवणारे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥

॥ श्री राजुलजीकी बारहमासी ॥

राग–ख्यालकी ।

नेमिसर बनड़ा, परण पधारो राजुल नारने । ॥ टेर ॥ श्रावण महिनो लागीयो स पियु, घटा चढी घनघोर । आभा चमके बिजली सकांइ, दादुर कर रहा सोरजी ॥ नेमि० ॥ १ ॥ भाद्रव

महिनो लागीयो सो पियु, वच्छ बारस तहेवार ।
सखिया पूजे गायने सरे, घर घर मंगलाचाररे ॥
नेमि० ॥ २ ॥ आशोज महिनो लागियो सकांइ,
दिन जो खारा जाय । परव होय तो उड़ मिलुं
सकांइ, लाउं नेम मनायजी ॥ नेम० ॥ ३ ॥
कार्त्तिक महिनो लागियो सकांइ, रूप चवदशरी
रात । अब घर आवो वालमा सकांइ, दीपमाला
परभात हो, ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ अगहन अकेली
किम रहुं सकांइ, में सांच झूठ निरधार । तेल
छड़ी तिल निसरिया सरे, राजुल राजकुंवारजी ॥
नेमि० ॥ ५ ॥ पोस दोष किसको देउ समे, कर्मन
केरो दोष । ज्यांरा प्रीतम घर वसे सकांइ, ज्यांने
प्यारो पोसजी ॥ नेमि० ॥ ६ ॥ माघ महिने वसंत
पंचमी सरे, घर घर उडे गुलाल । एकवार तो
खबर करोने, राजुलको न हवालरे ॥ नेमि० ॥ ७ ॥
फागुण महिनो लागीयो सकांइ, सब मिल खेले
फाग । पियु हमारा घर नहीं समें, किण संग खेलु
फागजी ॥ नेमि० ॥ ८ ॥ चेत्र महिनो लागियो

स कांइ, सज सोल सिणगार । गौरी पूजे गायने सरे, भर भर मोतियन को थाररे ॥ नेमि० ॥ ९ ॥ वैशाख महिनो आवियोरं लू वाजे असराल। धूप पड़े धरती तपे सरे, जले जमी पर पांवरे ॥ नेमि० ॥ १० ॥ जेठ महिनो आवियो सरे, पड़े आकरी धूप । तेल छड़ी तिल निसरचा स वांको पड़ गयो कालो रूपरे ॥ नेमि० ॥ ११ ॥ आषाढ महिनो आविया सरे, नेम न लीनो सार । नेमि राजुल गिरनार पेसवां, लीनो संजम भाररे ॥ नेमि० ॥ १२ ॥ समय सुंदरजीनी वीनती सकांई सुणजो वारंवार. वारे मास वर्ण करू तीरे, सुणजो बाल गोपालजी ने० ॥ १३ ॥

॥ श्री गणाधीश्वर गहुंली ॥

रतनमुनिजी गुरू वन्दो मोरे प्यारे, वन्दत होत आनन्द मोरे प्यारे ॥ टेक ॥ भव्य जीव उपकार के हेतु, दिव्य चरित्र तुम्हारा। निर्मल कीना दर्शन तुम गुरु, ज्ञान तणा भंढार मोरे प्यारे ॥

र० ॥ १ ॥ बाल ब्रह्मचारी गुरु सोभे, महिमा अपरंपारा । यति धर्मसे दीपता गुरुवर, देशना अमृत धारा ॥ मोरे० ॥ २ ॥ सायर सम गम्भीर गुरुवर, रवीसम तेज प्रतापो । शशी समान है सौम्य सुगुरुवर, मणिसम आप गुरु दीपो ॥ मोरे० ॥ र० ॥ ३ ॥ अष्टापद सम सुरवीर गुरु, दुर्धर कर्म हठावे। आतम ध्यानमें मगन होय के, मोक्ष नगर कों ध्यावे मोरे० ॥ र० ॥ ४ ॥ शहर फलवरधीमें आप विराजो, दर्शन कर हलसाया ॥ दिलमें हर्ष न मावे गुरुवर, आनन्द संघ मोलाया । मोरे० ॥ र० ॥ ५ ॥ वीर चौवीशे एकावन माहें, आश्विन मास सुहाया । कृष्ण बीज सोमवारसु सुन्दर, हर्ष हरख गुण गाया । मोरे० र० ॥६॥ ने गुरु सम अवर न दूजा अगमें, चरणमें शीश नमायो, दास प्रेम भक्ती मालीजे, मनवांछित फल पाया मोर ॥ र० ॥ ७ ॥

॥ गहुँला बीजी ॥

रत्नमुनि गुरु रायके, गुण गाउं चितलाय अक्षर अक्षर के विषे बहु गुण रहे समाय ॥ १ ॥

सुगुरु मे रतनमुनि गुण गाया ॥ सुमति सदा गुरु चितवसे, कुमातिभगे अति दूर । तीन करनको रोकते हो, दिव्य नाण भरपूर ॥ सु० ॥ २ ॥ खल मित्र गुरु आप सदा, करुण रस भंडार । पर उपकार सु शीलथे चरण रतन अवधार ॥ सु० ३॥ सायर सम गम्भीर गुरु, दर्शन निर्मल धार । बह्मचर्य गुरु धारते, महिमा अपरंपार ॥ ४ ॥ गगन समो गुरु निर्मला, रवी समतेज विकाश । शशि समान मुख सौम्य छे, मणि जिम दीपे खास ॥ ५ ॥ रत्नगुणासे सोभते, आतम मार्ग में लीन । कर्म वृन्द को तोड़ ते हो के मोक्षाधीन ॥ ६ ॥ जीवा जीव विचारमें, निपुण रहे गुरु राज। सकल वस्तु विज्ञान हो गुरु, दीर्घ बुद्धि मुनिराज ॥७॥ महा दुष्ट रिपु काम को छिनमें दीया हटाय। रतिकी कुमाति निरासकी धन्य वैरागी राय ॥८॥ हानी कर्त्ता अकार्य को, नष्टकी, ये तत्काल दूर हटाय दुष्टको, मोह महा विकराल ॥ ९ ॥ राग राहित वैराग्य में रमण करोहो नाथ त्रिविध योगसु, दमन करी सुमती सखी के साथ

॥ १० ॥ जस निर्मल गुरुराजका सकल विश्व विख्यात । दास प्रेमको तारीयेरे, ज्ञान हो साक्षात ॥

॥ अथ श्री टोडरमल प्रारम्भः ॥

चांदो ए चांदो चाँदलोरे, म्हारे चांदो वसेरे आकाश । टोडरमलजी तोले ए। जायो जायो आज विहामणोरे, म्हारे सुरां ऊगणहार ॥ टो० ॥ पजूसण चडीयो पर वाण ॥ टो० ॥ जणे हुं सूतो जागीयोरे, म्हारे गुरुसा आवणहार ॥ टो० ॥ पाट जडाउं पाटीयारे म्हारे, सोवन फूलडीहार ॥ टो० ॥ पुज्यजी वेसाडुं आपनारे म्हारे, वांचे स रस वखाण ॥टो०॥ मुख मोडे मुहपती हसेर, म्हारे मुखड़ो पुनमरो चंद ॥टो०॥ हरियो पुठो हाथ मेरे, वांचे कल्प वखाण ॥ टो० ॥ उडती चीडयल मोंकहे रे म्हारे, पुज्यजीरो अविचल पाट ॥ टो० ॥ चोखो ए चोखो जोवीयोरे म्हारे सा समो नहीं कोय ॥ टो० ॥ जे गच्छ चौरासीमें जोवीयारे म्हारे, खरतरगच्छ समोप न कोय ॥ टो० ॥ रे तपोरे उपासरेरे म्हारे हाथी हलके वार ॥टो०॥ इणारे खरतरारे उपासरेरे, म्हारे जीव

दया प्रतीपाल ॥टो०॥ लेय म्हारा सुसराजी बीवहारी-
यारे म्हारे, घरमे टकारी जोड़ ॥ टो० ॥ लेवे सोनो
रुपो अति घणोरे म्हारे मुकट घणा वणरो कोड
॥ टो० ॥ रुपया तो म्हारे घरे घणारे म्हारे पुस्तक
लेवारो कोड ॥ टो० ॥ हस्ती घोड़ा हींसणारे मोतीड़े
जड़त पलाण ॥ टो० ॥ लेय जे चड़ जुहारसिंहजी
जोवीयारे म्हारे नगरीमें बहुत सुगाल ॥ टो० ॥
लेय घी पांरी रे लाबु आरे दूधे बुट्ठा मेह ॥टो०॥
लेये पानज पाटण नीपजेरे म्हारे सोपारी अजमेर
॥ टो० ॥ काथो नीपजे मेड़तेर म्हारे म्हारा रे
रंग खरतरगच्छ होय ॥ टो० ॥ डूंगरिया हरिया
हुआरे म्हारे, एक वड़ी हारीदार ॥ टो० ॥ लेवे
दुकडिये मण वाजरीर म्हारे, छकड़ीये मण जुवार
॥ टो० ॥ कोला भरसा वाजरीरे म्हारे घर भरसां
जुवार ॥ टो० ॥

इतिश्री प्राचीनस्तवनावली समाप्तः ।

जाहिर-खबर.

जैनधर्मावलम्बी चतुर्विध श्री संघ (साधु [illegible]
श्रावक-श्राविका) आदि सर्व महानुभावों को [illegible]
होकि-आपको नवपदादि व अंजन शलाका प्र[illegible]
उत्सवकी तथा विवाह वगैरा शुभप्रसङ्गकी कुंकुम [illegible]
और चौपाइ, स्तवन, सिज्झाय, आदि हरेक गायनका
पुस्तकें व व्यापार सम्बन्धी हुंडियें, चिट्ठीयें, नोट
पेपर, कार्ड, लिफाफे, चेक, रसीदें वगैरा छपाना हो,
तथा प्रुफ शुद्ध कराना हो या दीवाली पूजन व पर्यूषण
क्षमापण पत्रिका, विवाह की कुंकुमपत्रियें व हुंडियें
बिना नामकी जोकि हरेक के काम आसके वैसे खोखे
चाहिये तो तथा उजमणे का सामान, जैन-गायनकी
पुस्तकें, रेतीकी घडीयें, जैन अगरबत्तीयें, कटासणें,
चरवले, तीर्थंकरो [illegible] (छबीयें)
चाहिये तो नीचे [illegible]

म[illegible] ड़ा.

रतलाम, (मालवा)